तृतीय अध्याय

"शंकर पुणतांबेकर के विवेच्य एकांकियों का कथ्य एवं शिल्प"

तृतीय अध्याय

''शंकर पुणतांबेकर के विवेच्य एकांकियों का कथ्य एवं शिल्प''

❑ **प्रास्ताविक**

3.1 कथ्य

3.1.1 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' एकांकी में डॉक्टरों की पूँजीवादी वृत्ति का उद्‌घाटन

3.1.2 'तितली' - अतिआधुनिकता के प्रति आकर्षण पर प्रतीकात्मक व्यंग्य

3.1.3 'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज' - मध्यवर्गीय मनुष्य की वृत्ति का चित्रण

3.1.4 'इन्टरव्यू : एक चुनाव के उम्मीदवार से' एकांकी में चुनाव व्यवस्था का खोखलापन

3.1.5 'रंग में भंग' एकांकी में युवकों की बदलती मानसिकता के दर्शन

3.1.6 'इन्टरव्यू की तैयारी' एकांकी में शिक्षण व्यवस्था की त्रासदी

3.1.7 'नहाने के बहाने' - हास्यात्मक व्यंग्य

3.1.8 'अनोखेलाल ने नौकर रखा' एकांकी में झूठी प्रतिष्ठा के दर्शन

3.1.9 'अनोखेलाल बीमार पड़ते हैं' - हास्यात्मक व्यंग्य

3.1.10 'अनोखेलाल का सेवाव्रत' - सामाजिक व्यंग्य

3.1.11 'अनोखेलाल चांदनी रात में' - कौटुंबिक हास्य-व्यंग्य

3.1.12 'चूहें' - नेताओं पर प्रतीकात्मक व्यंग्य

3.1.13 'अनोखेलाल खाना बनाते हैं' - हास्यात्मक व्यंग्य

3.1.14 'अनोखेलाल का विवाह दिन' - कौटुंबिक हास्य-व्यंग्य

3.2 विवेच्य एकांकी संग्रह की एकांकियों का शिल्प

3.2.1 भाषा शिल्प

3.2.1.1 संवाद शिल्प

3.2.1.2 अलंकारों का प्रयोग

3.2.2 रंगमंचीय निर्देश

3.2.3 अभिनय निर्देश

3.2.4 पात्र सृष्टि

3.2.5 विषय केंद्रिता

3.2.6 प्रतीक योजना

3.2.7 शीर्षक योजना

3.2.8 संकलन-त्रय एवं मंचीयता

❑ **निष्कर्ष**

तृतीय अध्याय

''शंकर पुणतांबेकर के विवेच्य एकांकियों का कथ्य एवं शिल्प''

❑ प्रास्ताविक -

हर साहित्य-निर्मिति के पीछे कोई ना कोई उद्देश्य अवश्य रहता है। किसी साहित्य में वीरता का वर्णन प्रचूर मात्रा में होता है, तो किसी में श्रृंगार का, किसी साहित्य में प्रेम, द्वेष आदि को चित्रित किया जाता है, तो किसी साहित्य के माध्यम से समाज के विभिन्न विषयों को उजागर किया जाता है। साहित्य के माध्यम से लेखक अपने विचार पाठकों तक पहुँचाता है। अर्थात् कोई भी साहित्य लिखने के पीछे लेखक का विशिष्ट उद्देश्य रहता है। लेखक का यही उद्देश्य जो वह साहित्य में व्यक्त करता है, उस साहित्य का 'कथ्य' कहलाता है। कथ्य दो प्रकार का होता है, - एक कथात्मक और दूसरा वृत्तात्मक। कथात्मक कथ्य उपन्यास, कहानी, नाटक आदि में आता है तो वृत्तात्मक कथ्य निबंध, रिपोर्ताज, जीवनी आदि में आ जाता है। कथ्य को प्रस्तुत करने का ढंग या साहित्य लेखन में लेखक द्वारा प्रयुक्त विशिष्ट शैली उस साहित्य का 'शिल्प' कहलाती है। साहित्य निर्मिति के पीछे शंकर पुणतांबेकर का मुख्य उद्देश्य समाज में व्याप्त समस्याओं, विसंगतियों पर व्यंग्य करना है।

3.1 कथ्य -

कथ्य का अर्थ है 'कहने योग्य बात'। 'नालंदा विशाल शब्दसागर' में इसका कोशगत अर्थ इस प्रकार दिया गया है - ''(1) कहने के योग्य। कथनीय। (2) जो कहा जाता हो। कहलाने वाला। (3) साधारण बोलचाल की भाषा में प्रचलित।''[1] मानक हिंदी कोश' में रामचंद्र वर्मा ने कथ्य का अर्थ स्पष्ट किया है - ''कथ्य -वि.(सं. ✓ कथ + यत्) 1. जो कहा जा सके। कहे जाने के योग्य। 2. जो कहना उचित हो''[2] इस प्रकार से कथ्य के अर्थ को देख सकते हैं।

शंकर पुणतांबेकर के 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' एकांकी संग्रह में भी विभिन्न विषयों को उजागर किया गया है। विवेच्य एकांकियों के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक आदि विसंगतियों पर व्यंग्य करना ही लेखक का उद्देश्य है। अत: इन एकांकियों में विद्यमान व्यंग्य ही कथ्य कहा जा सकता है।

---

1. सं.श्री. नवल जी - नालंदा विशाल शब्द सागर, पृष्ठ - 1952
2. सं.रामचंद्र वर्मा - 'मानक हिंदी कोश', पहला खंड, पृष्ठ - 443

3.1.1 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' एकांकी में डॉक्टरों की पूँजीवादी वृत्ति का उद्‌घाटन :

यह एकांकी संग्रह की प्रतिनिधि एकांकी है। इसका उद्‌देश्य डॉक्टरों की पूँजीवादी दृष्टि पर व्यंग्य करना है। इस एकांकी का प्रमुख पात्र किशोर के संवादों के माध्यम से समय-समय पर पुणतांबेकर ने व्यंग्य प्रस्तुत किया है। इस व्यंग्य पर उन्होंने हास्य का मुलम्मा चढ़ा दिया है।

किशोर अपने दोस्त डॉ. कैलाश के घर आता है तो देखता है कि कैलाश की पत्नी, बहन, पिता सभी डॉक्टरी पेशे के हैं। तब किशोर ठिठोली करता हुआ कैलाश से कहता है -

"किशोर : × × × और कैलाश मैं तो कहता हूँ डॉक्टर बनाने के लिए तुम अपने बच्चे को मेडिकल कॉलेज भेजने के चक्कर में न पड़ना।

कैलाश : क्यों ?

किशोर : इसलिए कि तुम दोनों के डॉक्टर रहते तुम्हारा बच्चा डॉक्टरी सर्टिफिकेट के साथ ही जो जन्मेगा।"[1]

किशोर के इस संवाद से अपने बेटे या बेटी को भी डॉक्टर बनाने की डॉक्टरी पेशे के लोगों की प्रबल इच्छा को दर्शाया है। यह लोग अपनी संतान को डॉक्टर बनाकर ही दम लेते हैं। परिणाम स्वरूप काबिल डॉक्टरों की कमी और पेशेवर डॉक्टरों की भरमार हो रही है।

इसी तरह किशोर के संवादों में हँसी की मीठी लकीर के साथ-साथ व्यंग्य का तिखा प्रहार भी छूपा हुआ है। जब किशोर बीमार पड़ता है तो हर कोई अपनी-अपनी ज्ञान से उसे कोई न कोई बीमारी होने का दावा करता है। कैलाश के पिता, बहन, पत्नी सभी अलग-अलग स्पेशलिस्ट होने के कारण वह सब अपने ज्ञान के बलबुते पर किशोर की बीमारी का अनुमान लगाते हैं और प्रत्येक का अनुमान अलग-अलग निकलता है। जिससे डॉक्टरों की सीमित ज्ञान का दर्शन होता है और साथ ही अप्रत्यक्ष रूप से विद्‌यमान उनकी पूँजीवादी दृष्टि भी सामने आ जाती है। यह सब डॉक्टर-परिवार मिलकर भी किशोर की बीमारी के संबंध में किसी

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ', पृष्ठ - 14-15

एक निर्णय पर नहीं पहुँच पाते हैं। डॉक्टरों के इस अज्ञान पर किशोर द्वारा व्यंग्य किया गया है। कैलाश के यह कहने पर कि, अन्य डॉक्टरों जैसा मैं नहीं हूँ, तब किशोर उससे कहता है -

"किशोर : हाँ जरुर नहीं होगे। वे टी.बी. का इलाज करते हैं और पेशन्ट टी.बी. से मरता है। तुम्हारे टी.बी. के इलाज में वह कैन्सर से मरता होगा।"[1]

इस प्रकार से प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से व्यंग्यकार पुणतांबेकर ने डॉक्टरों की पूँजीवादी वृत्ति पर व्यंग्य किया है। अपने कर्तव्य को ईमानदारी से निभानेवाले डॉक्टरों की संख्या ऊँगलियों पर गिनने योग्य है। आधुनिक डॉक्टरों की अपने फर्ज को निभाने के बदले पैसा बटोरने की वृत्ति को यहाँ व्यंग्य का निशाना बनाया गया है। इस कडवे सच को पुणतांबेकर ने हास्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। 'डॉक्टर' जो पेशंट को नई जिंदगी देने का काम करता है, आज अपनी सुविधा के साधन जमाने के लिए अपने पास आए मरीज़ की छोटी-सी बीमारी को बड़ा-चढ़ा कर इतनी बड़ी बताते हैं कि, पेशंट डर के मारे डॉक्टरों की कही हर बात मानता है, अलग-अलग टेस्ट करवाता है और डॉक्टरों की जेबें गर्म करता रहता है।

इस एकांकी का उद्देश्य डॉक्टरी पेशे के खोखलेपन पर व्यंग्य करना ही है। इस व्यंग्य की कटुता को लेखक ने हास्य के मीठे वेष्टन में लपेटकर पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। आजकल समाज में मरीज़ और डॉक्टर का नाता शोषक और शोषित जैसा बनता चला जा रहा है। मरीज़ मिला नहीं कि डॉक्टर उस पर शेर की तरह झपट पड़ता है और उसे जो बीमारी हुई है उसका भी और जो नहीं हुई है उसका भी डर दिखाकर अपनी तिजोरी खचाखच भर लेता है। डॉक्टरों की इसी वृत्ति को उजागर करने का काम प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से पुणतांबेकर ने किया है।

3.1.2 'तितली' - अतिआधुनिकता के प्रति आकर्षण पर प्रतीकात्मक व्यंग्य :

प्रस्तुत एकांकी हास्य-व्यंग्य का विशेषण तो धारण किए हुए है ही, लेकिन साथ ही यह एक प्रतीकात्मक एकांकी भी है। रतना जो स्वच्छंद वृत्ति की है, उसकी इस वृत्ति का संबंध तितली की स्वच्छंदी स्वभाव से जोड़ा गया है। तितली रतना के स्वच्छंदी वृत्ति का प्रतीक है। यह एकांकी आधुनिक युग के परिवारों की झाँकी प्रस्तुत करने में सफल रही है कि

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ', पृष्ठ - 20

जिसमें न पत्नी को अपने मंडलों, सहेलियों, पार्टियों से फुरसत है और ना ही घर की तरफ ध्यान देने की जरुरत महसूस होती है। इस एकांकी में रतना नामक पात्र अतिआधुनिकता की शिकार है। रतना की स्वच्छंद वृत्ति को स्पष्ट करनेवाले संवाद एकांकी में बार-बार आ गए हैं। जैसे -

"राधा : तो फिर, बीबीजी, घर में बच्चों को कौन सँभालेगा ? उनके पति ?

रतना : स्त्रियों का जीवन केवल रोटी पकाने और बच्चों को सँभालने के लिए ही नहीं है। संसार में स्त्री फूल के समान है। फूल बाग में स्वच्छंद होकर खिलता और डोलता है। हम भी वैसा ही जीवन चाहती हैं।"[1]

इस प्रकार से रतना के स्त्रीवादी विचार एकांकी में जगह-जगह देखने को मिलते हैं। शोभा एक ऐसा पात्र है जो घोर आधुनिकता के युग में भी अपनी जिम्मेदारियाँ बखूबी निभा रही है। यह शोभा रतना की ही सहेली है जो उसके साथ पढ़ती थी। बहुत दिनों के बाद वह रतना से मिलती है। शोभा जब रतना का स्वयं उसके घर के प्रति और पति किशोर के प्रति उसका व्यवहार देखती है तो उसके पति किशोर से मिलकर रतना की अच्छी खिंचाई करती है, जिसके परिणाम स्वरुप रतना को अपनी गलती का एहसास हो जाता है। उसे पता चलता है कि, वह खुद पति के पैसों पर सारी शान-शौकत भोग रही है। उसी के पैसों पर नाज-नखरे उठा रही है और उसी पति को ही कौड़ी की भी क़ीमत नहीं देती तब वह बहुत शरमिंदा होती है और किशोर से माफी माँगती है।

यह एक प्रतीकात्मक एकांकी है। इसमें लेखक ने नारी के बदलते आचार-विचार को अपने लेखन का विषय बनाया है। इस आधुनिकता के कारण परिवारों में बढ़ता तणाव और बिखराव लेखक ने यहाँ पर वर्णित किया है। रतना एक स्वच्छंद तितली के समान अपने ही जीवन में मग्न है। उसे अपने पति किशोर के भावनाओं की कोई कदर नहीं है, उसकी इच्छओं की कोई परवाह नहीं है। उसकी कोई भी बात सुनना उसे अपने अहम् पर चोट करने जैसी लगती है। इसी अहम् के कारण वह अपने ही विचारों का अनुकरण करती है, किसी की नहीं सुनती है। लेकिन जब उसकी सहेली शोभा द्वारा वह सच्चाई को जान जाती है तब उसे अपनी गलती का एहसास हो जाता है। प्रस्तुत एकांकी में पुणतांबेकर ने इन महिला मंडलों के झुठे दिखावे, बेकार की बातों को लेकर किए गए चर्चों पर व्यंग्य कसा है।

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'तितली', पृष्ठ - 32

इस तरह से पुणतांबेकर ने रतना की तरह जो स्त्रियाँ अतिआधुनिकता के जाल में फँसी है, उन्हें शोभा के माध्यम से सच्चाई से परिचित कराया है। भटके हुए लोगों को राह दिखाते हुए उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि, स्त्री-पुरुष दोनों भी समान हैं लेकिन इसमें से अगर कोई अपने आप को श्रेष्ठ समझने लगे तो संसार की गाड़ी डाँवाडौल होने लगती है। इसलिए इस गाडी के दोनों पहिए समान और एक साथ चलना जरुरी है।

3.1.3 'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज' - मध्यवर्गीय मनुष्य की वृत्ति का चित्रण

अनोखेलाल पात्र को लेकर लिखे गए नौ एकांकियों में से यह एक है। इस एकांकी का केंद्र बिंदू अनोखेलाल है, जो मध्यवर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व करता है। मध्यवर्गीय समाज की उच्चवर्गीय बनने की अभिलाषा उन्हें चूप नहीं बैठने देती। वह हमेशा उच्चवर्गीयों को प्राप्त भौतिक साधनों को जुटाने की कोशिश में लगे रहते हैं। मध्यवर्गीय समाज का सुख प्राप्ति का यह प्रयास तथा उच्चवर्गीयों की सुखासीन वृत्ति का चित्रण प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से हुआ है। ऑफिस का चार्ज अनोखेलाल को मिलने पर किस प्रकार से उसके वर्तनों में परिवर्तन हो जाता है, इसका हास्य-व्यंग्यपूर्ण वर्णन प्रस्तुत एकांकी में मिलता है।

अनोखेलाल के ऑफिस के दोनों अफसर छुट्टी पर होने के कारण ऑफिस का चार्ज अनोखेलाल के पास आ जाता है। परिणाम स्वरूप बड़े अफसरों की सभी सुविधाएँ अनोखेलाल को थोड़े ही समय के लिए सही लेकिन मिल जाती है। साथ ही ऑफिस के सभी निर्णय उसे लेने होते हैं। इन सभी कारणों से अनोखेलाल अपने आप को कोई बड़ा अफसर समझने लगता है और हर काम नौकर लछमन से करवाने को कहता है, जैसे -

"अनोखे : तरकारी लाने मैं जाऊँ। कमाल करती हो लक्ष्मी। एक अफसर क्या झोला लेकर मंडी में तरकारी खरीदने जायेगा। अरे, लछमन से क्यों नहीं कह देती।"[1]

ऑफिस के चार्ज के साथ जो सुविधाएँ मिली है उन सुविधाओं का अनोखेलाल लाभ उठाना चाहता है।

"अनोखे : बेबी से कहो रोए नहीं। आज शाम उसे ऑफिस की मोटर में घूमने ले जायेंगे। तुम भी चलना लक्ष्मी, बड़ा मजा रहेगा। आज मैं ऑफिस जल्दी जाऊँगा।"[2]

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज', पृष्ठ-49
2. वही, पृष्ठ - 52

इस प्रकार से प्रस्तुत एकांकी मे मध्यवर्गीयों की उच्चवर्गीय बनने की इच्छाओं को विभिन्न प्रसंगों, संवादों के माध्यम से स्पष्ट किया है। साथ ही उच्चवर्गीयों की वृत्ति, अफसरों की पक्षपाती नीति को भी यहाँ उजागर करना इस एकांकी का उद्देश्य है। ऑफिस का चार्ज अनोखेलाल को मिलने पर उसका सहकर्मचारी दोस्त, मनोहर बधाई देने जाता है, सुरेशचंद्र उसका बेटा बीमार होने के कारण छुट्टी की दरखास्त लेकर आता है, दीनानाथ ऑफिशियल काम होने के कारण देर से आने की इजाजत माँगता है लेकिन अनोखेलाल सभी को अपमानित कर लौटा देता है। जैसे, वह सुरेशचंद्र के छुट्टी माँगने पर कहता है -

''सुरेशचंद्र : लेकिन अनोखेलाल ...

अनोखे : ढंग से बात करो। तुम अनोखेलाल से नहीं अपने बॉस से बात कर रहे हो। अपने साहब से किस अदब से बात की जाती है, इतना तक शऊर नहीं है तुममें।

सुरेशचंद्र : माफ कीजिए, मुझसे कसूर हो गया। मेरे बेटे की - तबियत ...

अनोखे : उसे डॉक्टर को दिखाओ तबियत खराब है तो। आप घर बैठकर क्या कर लेंगे उसकी तबियत के लिए ? जाओ, अभी काफी समय है। और समय पर ऑफिस में हाजिर रहो।''[1]

इस प्रकार से अनोखेलाल के स्वभाव में परिवर्तन हो जाता है।उस पर अफसरी का नशा सँवार हो जाता है। लेकिन जब टाइपिस्ट मिस शर्मा थोड़ा-सा मुस्कुराकर पास आकर बैठती है, तब अनोखेलाल झट से उसकी छुट्टी की अर्जी मंजूर कर देता है।

''अनोखे : कहो कैसे चली आई ?

मिस शर्मा : बात यह है कि आज दो बजे मेरी ममी आ रही है बम्बई से। मुझे छुट्टी चाहिए।

अनोखे : अच्छा, अच्छा। तो फिर यहाँ तक आने का कष्ट क्यों किया ? किसी के हाथ ऑफिस में ही भिजवा दी होती दरखास्त।''[2]

इस प्रकार से अफसरों की पक्षपाती नीति को भी यहाँ स्पष्ट किया है जिस प्रकार से जरुरी काम के लिए छुट्टी माँगनेवाले सुरेशचंद्र की दरखास्त नामंजूर कर मिस-शर्मा

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर-बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ-'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज', पृष्ठ-51-52
2. वही, पृष्ठ - 54-55

के गैरजरुरी काम के लिए अनोखेलाल झट से छुट्टी की अर्जी मंजूर कर देता है। अनोखेलाल का यह बर्ताव लक्ष्मी को भी अच्छा नहीं लगता। अनोखेलाल अपने आपको सचमुच का अफसर समझने लगता है और भूल जाता है कि यह अधिकार उसे थोड़े ही समय के लिए दिया गया है लेकिन काम से बाहर गए मैनेंजर साहब उसी दिन वापस आ जाते है। अनोखेलाल का अफसर बनने का मौका निकल जाता है। बाद में मनोहर, सुरेशचंद्र, दीनानाथ आदि आकर उसका मजाक भी उड़ाते हैं -

''सुरेशचंद्र : (प्रवेश करके) अढ़ाई घंटे की अफसरी अफसर बनने के पहले ही खत्म हो गयी। हा हा हा।''[1]

इस प्रकार पुणतांबेकर जी ने प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से व्यक्ति की अधिकार जमाने की भावना तथा क्षणिक अधिकार से व्यवहार में आते बदलावों को भी पाठकों के सामने रखा है।

3.1.4 'इन्टरव्यू : एक चुनाव के उम्मीदवार से' एकांकी में चुनाव व्यवस्था का खोखलापन :

नेताओं की गैर जिम्मेदारी तथा नागरिकों की लापरवाही को स्पष्ट कर, उनमें जागृति लाने का प्रयास करना ही प्रस्तुत एकांकी का उद्देश है।

प्रस्तुत एकांकी का डॉक्टर पात्र जनता को सही नेता चुनने में मदद करनेवाला है। इसलिए सही नेता का चुनाव करने के लिए डॉक्टर अखबार में इश्तिहार देकर चुनाव में खड़े रहे उम्मीदवार से बात करते हुए डॉक्टर द्वारा पूछे गए सवालों के जो जवाब मनोहरलाल देता है, उससे उसकी अज्ञानता स्पष्ट प्रकट होती है। वह जिस क्षेत्र में चुनाव के लिए खड़ा है, उस क्षेत्र के बारे में उसे कुछ भी जानकारी नहीं है और ना ही वह उस क्षेत्र का निवासी है। वह खुद पढ़ा-लिखा नहीं है, केवल राजनीति के दाँव-पेंच खेलता है। चुनाव क्षेत्र की प्रतिव्यक्ति की सालाना आमदनी क्या है ? उस क्षेत्र में मजदूर, किसान, मध्य और उच्च वर्ग के लोगों का प्रतिशत क्या है ?- इस बारे में उसे कुछ भी मालूम नहीं। जब किसानों के लिए तैयार की गई योजनाओं के बारे में डॉक्टर उससे पूछता है तब वह कहता है -

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ-'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज', पृष्ठ - 57

''उम्मीदवार : बहुत सी हैं। उनके लिए कुएँ, पंप, नहरें, तालाब आदि सिंचाई के साधन उपलब्ध करना, अच्छे बैल, बीज, खाद आदि के लिए तकावी की व्यवस्था करना इस प्रकार बहुत सी योजनाएँ हैं।

डॉक्टर : देखिए, नेता लोग अपने भाषणों में जिस प्रकार की बातें प्राय: हाँक देते हैं एक ही साँचे की, कुछ वैसी ही बातें आप कर रह हैं। आप शायद नहीं जानते कि यहाँ के किसानों के सामने समस्या सिंचाई की नहीं, बाढ़ की है। अच्छे बैल, बीज और खाद की नहीं है, बल्कि अच्छी मण्डियों और उन तक पहुँचाने के मार्गों की है। यहाँ का हर किसान सोचता है कि खून पसीना बहाकर पैदा की हुई अपनी पैदावार के उचित दाम कैसे मिलें।''[1]

चुनाव व्यवस्था एक खेल बनकर रह गया है। आजकल ना ही नेताओं को जनता की फिक्र है और ना ही जनता अपने अधिकारों के प्रति जागरुक है। अगर एक बार लोगों ने ठान लिया कि, हम चुनाव में वोट उसे ही देंगे जो लायक हो और इसके लिए उसे जाँच-परख कर ही वोट डालेंगे तो शायद थोड़ा-सा परिवर्तन आ जाए लेकिन ऐसा प्रत्यक्ष में नहीं हो पाता है। लोग चंद रुपयों के लालच में अपनी कई सुविधाएँ इन नेताओं के हाथ में सौंप देते हैं। यह नेता जो अपनी चुनावी क्षेत्र के बारे में कोई भी जानकारी नहीं रखते हैं फिर भी वहाँ की सुधारणा की डिंगे हाकते हैं। जब उन्हें यह भी मालूम नहीं होता कि, समस्या क्या है और तब वे उसका समाधान ढूँढने निकलते हैं।

इस प्रकार एकांकीकार ने अनपढ़ नेता का चित्रण प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से किया है। उस नेता के लिए शालेय शिक्षा से राजनीतिक अनुभव ज्यादा श्रेष्ठ है। वह कहता है - ''स्कूली शिक्षा से क्या होता है डॉक्टरसाहब। राजनीतिक क्षेत्र मे मैंने इतना काम किया है और उससे इतना सीखा और अनुभव प्राप्त किया है कि उसके मुकाबले स्कूल कॉलेज की शिक्षा कुछ भी नहीं है।''[2]

इस प्रकार से शिक्षा के मुकाबले राजनीति के दाँवपेंचों को ज्यादा महत्व देनेवाले नेता के हाथ में समाज की बागडौर थमा देना समाज के लिए हमेशा घातक ही साबित हुआ है। अत: इस एकांकी के माध्यम से पुणतांबेकर ने समाज में रहनेवाले हर व्यक्ति को सोच-समझकर,

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'इंटरव्यू : एक चुनाव के उम्मीदवार से', पृष्ठ - 64-65
2. वही, पृष्ठ-63

जाँच-परख कर वोट देने की बात कही है। किसी झूठे आश्वासनों या लालच में न आकर योग्य नेता का चुनाव करवाना हर नागरिक का फर्ज है। पुणतांबेकर ने इसी फर्ज को याद दिलाने की कोशिश की है।

3.1.5 'रंग में भंग' एकांकी में युवकों की बदलती मानसिकता के दर्शन -

कॉलेज के छात्रों की मनोवृत्ति, हॉस्टेल में रहने के कारण मिलनेवाली आज़ादी का दुरुपयोग, अध्यापक और छात्रों की परीक्षार्थी वृत्ति आदि विभिन्न मुद्दों पर व्यंग्य करना और वर्तमान समस्याओं को उजागर करना इस एकांकी का उद्देश्य है।

कॉलेज विद्यार्जन का स्थान न होकर वह छात्रों को प्रेमार्जन का स्थान लगता है। कॉलेज विद्यालय से प्रेमालय बनते चले जा रहे हैं। हर कोई लड़कियों के पीछे लगा रहता है। इन लड़कों में से ही खन्ना और वर्मा भी है। मेहता भी खन्ना और वर्मा के साथ पढ़ता है, लेकिन उसे प्रेम आदि में कोई दिलचस्पी नहीं है, वह कॉलेज के गिने-चुने स्कालरों में से एक है। मंगल खन्ना के घर में नौकर है। खन्ना और वर्मा दोनों रागिनी नाम की लड़की से प्रेम करते हैं। दुर्भाग्यवश उनकी प्रेमिकाएँ हर साल बदलती रहती हैं। हर साल वे फिर से नई लड़की पर डोरे डालना शुरू करते हैं। मेहता उनकी इस आदत पर व्यंग्य करते हुए कहता है -

"मेहता : बीसवीं सदी के सभी मजनू ऐसी ही बातें करते हैं, लेकिन जब देखते हैं कि अपनी लैला दूसरे की बीबी बन गई है तो वे दूसरी लैला की खोज में निकल पड़ते हैं।"[1]

मेहता इन लड़कियों के पीछे भागनेवालों पर व्यंग्य बाण चलाता है। इस संदर्भ में खन्ना और मेहता के संवाद देख सकते हैं -

"खन्ना : इस खन्ना का दिल तुम जानते नहीं मेहता, इसीलिए ऐसी बात कर रहे हो। अरे यह खन्ना आजकल के आलतू-फालतू मजनूओं में से नहीं है। उसके पास सिर्फ एक दिल है एक। और एक बार किसी को दे दिया तो बस दे दिया।

मेहता : मेरा ख्याल कुछ दूसरा ही है खन्ना।

खन्ना : वह क्या ?

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'रंग में भंग', पृष्ठ-75

मेहता : दिल वालों के पास सिर्फ एक ही दिल नहीं होता। बहुत से होते हैं। ... पिछले साल तुमने अपना दिल लीला को दिया था। वह शायद वापस मिल गया तुम्हें ?''[1]

इस प्रकार से युवकों की परीक्षा में सफलता पाने के बदले लड़कियों को पाने के लिए भाग-दौड़ मची हुई है।

पुणतांबेकर ने अध्यापकों के प्रति छात्रों में नष्ट होती आदर भावना को भी स्पष्ट किया है। उनकी पसंद तथा नापसंद के अध्यापकों को चुनने का तरीका भी अजीब है। लेक्चर नहीं लेते वे अध्यापक छात्रों में बहुत पसंद किए जाते हैं। खन्ना प्रोफेसर मूर्ति के विषय में कहता है -

''खन्ना : जब वह देखता है कि आज कक्षा में एक भी लड़की हाजिर नहीं है, तो वह उस दिन पढ़ाता ही नहीं। किसी न किसी बहाने लेक्चर लेने से मना कर देता है। मैं ऐसे प्रोफेसरों को दिलवाला प्रोफेसर कहता हूँ। नहीं तो वह इतिहास का प्रोफेसर भार्गव। बिल्कुल फूहड़ है तुम जैसा।''[2]

इस प्रकार से छात्रों के अपने अध्यापकों के प्रति आदर की भावना नष्ट होती चली जा रही है। छात्रों के साथ-साथ अध्यापकों में भी विद्यार्थी को परीक्षार्थी बनाने की वृत्ति पर प्रकाश डाला है। मेहता और खन्ना के प्रोफेसर भार्गव के विषय में संवाद देख सकते हैं -

''मेहता : लेकिन उसका इतिहास का ज्ञान तो बहुत अच्छा है।

खन्ना : खाक अच्छा है। एक दिन एक लड़के ने पूछा था आठवें हेनरी की छः रानियों के नाम क्या हैं, तो वह उस लड़के पर बिगड़ पड़ा। कहने लगा-उन रानियों से तुम्हें क्या करना है। वे परीक्षा में नहीं आ रही हैं।

मेहता : हाँ, हाँ याद आया मुझे भी। इस पर उस लड़के ने जवाब दिया सर, हमें खेद इसी बात का है कि वे परीक्षा में नहीं आ रहीं है, वरना हम उन्हीं को लेकर परीक्षा भवन से भाग जाते।''[3]

रागिनी को लेकर खन्ना और वर्मा झगडते-झगडते हाथापाई पर उतर आते हैं। रागिनी वॉर्डन की बेटी है। मेहता उन्हें समझाता है कि, अगर यह बात वॉर्डन को पता चली तो

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'रंग में भंग', पृष्ठ-75-76
2. वही, पृष्ठ - 78
3. वही, पृष्ठ - 78-79

उन्हें होस्टल से निकलवा देगा और कॉलेज से भी रस्टिकेट करवा देगा। लेकिन दोनों उसकी बात नहीं सुनते और घर की चिजें उठाकर एक-दूसरे को मारते हैं। इतने में वहाँ पर वॉर्डन आ जाता है, जो इन सभी की अब तक की सब बातें सुन चुका है। वॉर्डन समझता है कि ये सब उसी की बेटी रागिनी को लेकर झगड़ रहे हैं और इसलिए वह इन सब-खन्ना, वर्मा, मेहता मंगल आदि की शिकायत प्रिन्सिपल से करने की धमकी देता है। वॉर्डन की इस बात को सुनकर सभी डर जाते हैं और बता देते हैं कि, यह जो सब चल रहा था, वह असल में कॉलेज के गैदरिंग के नाटक की ग्रैन्ड-रिहर्सल थी। नौकर बना हुआ मंगल भी प्रो. शर्मा द्वारा लिखा गया नाटक लाकर वॉर्डन को दिखाता है। प्रो. शर्मा कॉलेज में नए होने के कारण उन्हें इस बात का पता नहीं था कि असल में भी वॉर्डन के बेटी का नाम रागिनी है। नाटक की नायिका का नाम बदलने का वादा सब मिलकर करते हैं। वॉर्डन कहता है -

"वॉर्डन : ठीक है, ठीक है। खूब प्रेम किए जाओ, मुझे कोई एतराज नहीं है। (जाता है)
खन्ना : सब रंग में भंग कर दिया, इस वॉर्डन के बच्चे ने बीच में ही आकर।
वर्मा : हाँ कितना नेचुरल रिहर्सल था।"[1]

इस प्रकार सभी नाटक की रिहर्सल में व्यत्यय आने के कारण अफसोस जताते है। रागिनी का रोल निभानेवाली निर्मला वॉर्डन की आवाज सुनकर भाग जाती है।

प्रस्तुत एकांकी कॉलेज युवकों से एवं, अध्यापकों से संबंधित बातों पर प्रकाश डालता है। छात्रों की अध्ययन के प्रति कम होती आस्था और अभ्यासार्थी न बनकर केवल परीक्षार्थी बनने की वृत्ति पर भी टीका की है। इस एकांकी का एक विशेष यह है कि, इसमें एक भी स्त्री पात्र नहीं है। जिस निर्मला नामक स्त्री पात्र का उल्लेख किया है, वह स्त्री पात्र केवल संवादों से ही आभासित किया गया है।

पुणतांबेकर ने हास्य-व्यंग्य का प्रयोग करते हुए कॉलेज के युवक-युवतियों की मनोवृत्ति, आझादी का गलत फायदा उठानेवाली युवकों की वृत्ति आदि को उजागर किया है और इस उद्देश्य का वहन प्रस्तुत एकांकी में सफलता से हुआ है।

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'रंग में भंग', पृष्ठ - 91

3.1.6 'इन्टरव्यू की तैयारी' एकांकी में शिक्षण व्यवस्था की त्रासदी :

हमेशा इंटरव्यू की तैयारी इंटरव्यू देनेवाला करता है, यह तो हमने आज तक देखा, सुना है। लेकिन इंटरव्यू लेनेवालों को भी इंटरव्यू लेने की तैयारी करनी पड़ती है और तब तो यह बहुत आवश्यक होता है, जब इंटरव्यू लेनेवाला सेठजी जैसा व्यक्ति हो। सेठजी एक अनपढ़ व्यक्ति होकर भी पैसों के जोर पर कॉलेज कमेटी के अध्यक्ष है। इस एकांकी के माध्यम से पुणतांबेकर ने समाज में किस तरह से पैसा बोलता है, का एक चित्र ही प्रस्तुत किया है। अनपढ़ सेठजी जिसे शैक्षणिक क्षेत्र की कोई गंध भी नहीं है, वह केवल पैसों के बलबुते पर कॉलेज कमेटी का अध्यक्ष बना हुआ है। इंटरव्यू लेने के लिए उसकी तैयारी का पुणतांबेकर ने बड़ा हास्यात्मक वर्णन किया है जिसके माध्यम से सेठजी और साथ ही सेठानी के भी अज्ञान के दर्शन हो जाते हैं -

''सेठानी : कौन सी देवी ? मैं तो महाकाली को जानती हूँ। जवाहर चौराहे पर ही तो उनका मंदिर है ?

सेठजी : अरे महाकाली नहीं। मैं महादेवी के बारे में पूछ रहा हूँ।

सेठानी : क्या यह महाकाली से भी बड़ी है ?

सेठजी : यह तो मैं नहीं जानता। लेकिन साहित्य के इतिहास में इसका नाम है। कविता करती है। प्रसाद का नाम सुना है ?

सेठानी : किस देवता के प्रसाद के बारे में पूछ रहे हो ?''[1]

इस प्रकार से पूरी एकांकी में सेठजी और सेठानी के संवाद ऐसे है जो हर समय उनके अज्ञान के द्योतक बन गए हैं। उन्हें यह भी मालूम नहीं है कि कौन से विषय के उम्मीदवार कौनसे विषय के लिए चुनने हैं ? सेठजी और सेठानी के संवाद देखे जा सकते हैं, जैसे -

''सेठजी : तुमने भाषा की जगह के लिए दरखास्त दी है या इतिहास की जगह के लिए ?

सेठानी : आप जिस जगह के लिए योग्य समझें चुन ले।''[2]

वर्तमान युग में व्यक्ति के ज्ञान से भी पैसा ही श्रेष्ठ बनता चला जा रहा है। व्यंग्यकार पुणतांबेकर ने एकांकी के माध्यम से यहाँ पर इसी बात को पाठकों के सामने रखा है।

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'इन्टरव्यू की तैयारी', पृष्ठ-99-100
2. वही, पृष्ठ - 107

कॉलेज कमेटी के अध्यक्ष वगैरा बने सेठजी जैसे लोग अनपढ़ होकर भी प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए अपने पैसों के बलबुते पर इन स्थानों पर आसीन हो चूके हैं। दूसरी ओर बड़ी-बड़ी डिग्री लिए हुए लोग 200 रुपये की नौकरी के लिए इंटरव्यू देते फिर रहे हैं। आज के समाज में भी इस विसंगति के दर्शन हमें रोज होते हैं। झूठे का बोलबाला होता है और सच्चाई हमेशा अँधेरे में छिपी रहती है। इस त्रासदी पर पुणतांबेकर व्यंग्य करते हैं।

एकांकी का उद्देश्य इसी व्यवस्था का पर्दाफाश करना है। शैक्षिक क्षेत्र में पैसों के आगे सब फीका पड़ जाता है। अनपढ़ होकर भी वह व्यक्ति सफलता प्राप्त करता है और पढ़े-लिखे दर-दर की ठोकरे खाते फिर रहे हैं यह एक गंभीर समस्या बनती चली जा रही है। प्रस्तुत एकांकी इसी बात को केंद्र बनाती है।

3.1.7 'नहाने के बहाने' - हास्यात्मक व्यंग्य :

यह हास्य प्रधान एकांकी है। इसमें पुणतांबेकर ने अनोखेलाल पात्र द्वारा व्यक्ति क्यों नहाता है ? इसके अनेक मजेदार कारण बताए हैं। लक्ष्मी अनोखेलाल को बार-बार कह कर थक जाती है कि, 'अब तो नहालो', लेकिन अनोखेलाल उसकी नहीं सुनता। वह कहता है -"स्कूल जाने की उम्र का हुआ तो इतवार को जैसे-तैसे नहाता। कई बार तो मैं घुसलखाने में बालटियाँ उलट देता था। और नहाने का नाटक करके बाहर आ जाता था।"[1]

इस प्रकार से अनोखेलाल उसके कॉलेज के दिनों की भी बात बताता है कि, वह कॉलेज में तो हफ्तों भर नहीं नहाते थे। न नहाने की सिल्व्हर जुबली मनाते थे। अनोखेलाल को आश्चर्य होता है कि लोग ठंड के दिनों में भी क्यों नहाते हैं। ठंड के दिनों में तो हमेशा कपड़ों में लिपटा शरीर गंदा होने का सवाल ही नहीं उठता। जो भी ठंड में नहाता है, वह अपनी खुशी से नहीं नहाता। अनोखेलाल का मानना है कि हर कोई एक-दूसरे के डर से नहाता है। वह कहता है कि छोटे लोग घर के बड़े-बूढ़े लोगों के डर से नहाते हैं, तो बड़े इस डर से कि छोटे कहेंगे कि कैसे हैं ये बड़े-बूढ़े नहाते तक नही। अनोखेलाल कहता है कि मंदिर के पूजारी भी भक्तों के डर से नहाता है और भक्त पूजारी के डर से नहाता है। इस प्रकार नहाने के पीछे भी व्यक्ति 'लोग क्या कहेंगे ?' - इस डर से नहाता है। अनोखेलाल ठंड के दिनों में भी सुबह-सुबह नहानेवालों के बारे में कहते हैं -

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'नहाने के बहाने', पृष्ठ-107

"अनोखे : हाँ, दुनिया में कुछ लोग ऐसे होते हैं जो ठंड में शेखी बघारने के लिए नहाते हैं। ठंडे पानी से नहाए बिना वे शेखी बघार नहीं सकते इसलिए ठंडे पानी से नहाते हैं। नहाकर ये लोग चुप नहीं बैठ सकते। कहते फिरेंगे मैंने तो नहा लिया है तड़के ही।"[1]

इस प्रकार ठंड के दिनों में नहानेवालों के पक्ष में अनोखेलाल नहीं है। उनका कहना है कि ठंड के दिनों में बदन वैसे भी कपड़ों से ढका हुआ होता है, तो उसका धूल से संबंध ही कहाँ आता है। अनोखेलाल का मत है कि अगर इतने ही बहादूर है तो सर्दी के दिनों में ठंडे पानी से नहाने के बदले गर्मी के दिनों में गरम-गरम पानी से नहाकर दिखाए। अनोखेलाल इसी प्रकार से बरसात के दिनों में नहानेवालों की भी खिल्ली उड़ाता है। वह कहता है -

"अनोखे : लोग बरसात के दिनों में भी नहाते हैं कितनी विचित्र बात है। ठंड में नहाने का तो धूल एक बहाना हो सकता है, लेकिन बरसात में तो वह भी नहीं होती और कई बार पानी से भीगने का मौका आता है।

लक्ष्मी : कोई रोजरोज थोडे ही भीगता है।

अनोखे : न भीगे। फिर भी हवा में पानी के इतने कण होते हैं कि अलग से नहाने की आवश्यकता नहीं रह जाती।"[2]

इस तरह से अनोखेलाल ठंड और बारिश के दिनों में नहाना फिजूल बात समझते हैं। गर्मी के दिनों में नहाने के बारे में वे सहमत हैं। गर्मी के दिनों में खूब गर्मी के कारण शीतलता के लिए या फिर पसीने के कारण नहा लेने में कोई हर्ज नहीं मानते।

अनोखेलाल का कहना है कि जो बात सिर्फ गर्मी के दिनों के लिए योग्य है उसे सालभर के लिए क्यों लागू कर दिया है। अगर ऐसी ही बात है तो गर्मी के दिनों में किए जानेवाली अन्य बातें भी सालभर क्यों नहीं की जाती ? जैसे कि हलके-फुलके कपड़े पहनना, शरबत-लस्सी पीना, खुली हवा में सोना। अगर यह बातें नहीं कर सकते तो नहाने को ही क्यों पकड लिया है। इस तरह से पूरे एकांकी में अनोखेलाल द्वारा नहाने के बहाने बताए गए हैं।

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'नहाने के बहाने', पृष्ठ-109
2. वही, पृष्ठ - 111

अंत में यह सब बताने के पीछे एकांकी का एकमात्र उद्देश्य यह बताया है कि, तन की सफाई से मन की सफाई ज्यादा जरुरी है। अनोखेलाल कहता है -

"अनोखे : यहीं तो रोना है। आदमी अपने मन को भी धोए तो दुनिया की सारी गंदगी आप धुल जाए। लेकिन शरीर को रोज रगड़-रगड़ कर धोनेवाला आज का आदमी अपने मन को कभी पानी की एक बूँद भी नहीं लगने दे रहा है। आज शरीर की चमक दमक ही सभ्यता है, मन की नहीं। मन पर तो छलकपट, ईर्ष्यादूवेष के मैल की परतों पर परतें चढ़ती जा रही हैं।"[1]

कहने का तात्पर्य यहीं है कि हम जितना तन साफ रखने की कोशिश करते हैं, उससे थोडी सी कोशिश मन साफ रखने के लिए करें तो हमारा जीवन खुशहाल बन जाएगा। मन पर जमी बेईमानी, दंगेफसाद, लूटखसोट रूपी मैल को धोना जरुरी है। संपूर्ण एकांकी हास्यात्मक है, लेकिन आखिर में एक एहम मुद्दे से उसे जोड़ा गया है। पुणतांबेकर की एक खासीयत यह भी है कि वह हँसाते-हँसाते लोगों को गंभीर विषय पर विचार करने के लिए मजबूर कर देते हैं।

3.1.8 'अनोखेलाल ने नौकर रखा' एकांकी में झूठी प्रतिष्ठा के दर्शन :

यह एकांकी आधुनिक युग के झूठ-मूठ के दिखावे पर व्यंग्य करता है। अनोखेलाल की पत्नी लक्ष्मी अपनी अमीर सहेली उर्मिला के स्वागत की तैयारी में जुटी है। वह अपनी सहेली को दिखाने के लिए पड़ोसवालियों से सोफासेट, ड्रेसिंगटेबल, रेडिओग्राम, आलमारियाँ आदि फर्निचर माँग कर लाती है और अपने घर में सजाकर रख देती है। साथ ही रोब जमा ने के लिए एक नौकर भी रख लेती है। अनोखेलाल को यह सब पसंद नहीं है। वह घर में नौकर रखने के खिलाफ है लेकिन पत्नी के ज़िद के कारण घर में नौकर रख लेते हैं। वह लक्ष्मी से कहते हैं कि सहेली आ रही है इसलिए घर में नौकर रखना, यह झूठा दिखावा करना मुझे बिल्कूल पसंद नहीं। तब लक्ष्मी कहती है -

"लक्ष्मी : उर्मिला जैसी धनी सहेली सूना सूना घर देखकर मेरे बारे में क्या सोचती ?

अनोखे : इसीलिए तुम किसी के यहाँ से यह सोफासेट या ड्रेसिंग टेबल तो किसी के यहाँ से यह रेडियोग्राम और अलमारियाँ माँगकर ले आई हो।

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'नहाने के बहाने', पृष्ठ-114

लक्ष्मी : हाँ दो-तीन हफ्तों के लिए ले आने में बुराई भी कौन सी है। उर्मिला वापस गई कि दूसरे दिन इन सबको लौटा दूँगी।

अनोखे : यह तो ठीक है। पर रामू न भी हो तो क्या हर्ज है ?

लक्ष्मी : हर्ज कैसा नहीं ? इतना सबकुछ हो और नौकर न हो तो उर्मिला के सामने हम काम करेंगे।''[1]

इस प्रकार से अनोखे के घर में नौकर का प्रवेश हो ही जाता है और लक्ष्मी उस नौकर की खातिरदारी में लग जाती है। नौकर रामू हर काम उलटा ही कर देता है। कभी टेबल क्लॉथ पर स्याही गिरा देता है, कभी कपड़ों पर लोहा करने के लिए कहा तो दूसरे ही कपड़ो पर लोहा कर देता है। उसे जुतों को पॉलिश करने के लिए कहा तो सारा पॉलिश एक जूते पर खत्म कर देता है। रामू की इन गलतियों पर अनोखेलाल उसे डाँटते हैं तो उलटा लक्ष्मी उन पर ही बिगड़ जाती है। रामू से कोई भी गलती हो लक्ष्मी उस पर पर्दा डाल देती है। उसे डर है कि वह किसी बात पर नाराज होकर काम छोड़ कर न चला जाए। एक दिन सिलाई मशीन का ढक्कन खुला देख लक्ष्मी चिढ़ जाती है। उसे लगता है कि यह काम अनोखे का है। लेकिन जब उसे पता चलता है कि नौकर रामू ने अपना कुरता सीने के लिए मशीन खोली थी, तब वह उस पर नहीं बिगड़ती बल्कि उसे समझाती है -

''लक्ष्मी : अच्छा अच्छा। फिर तेरी कमीज सिल गई या नहीं ?
जब भी मशीन खोला करो उसका ढक्कन वापस लगा दिया करो। जाओ ढक्कन लगा दो तो।

रामू : जी बीबीजी। (जाता है।)''[2]

लक्ष्मी की इस बात पर अनोखे उसे टोकते हैं -

''अनोखे : उसकी गलती कोई गलती नहीं। इतनी खुशामद भी अच्छी नहीं होती।

लक्ष्मी : मुश्किल से मिला है। छोड़कर चला गया तो ? ऐसे सजे-सजाए ड्राइंगरूम को उर्मिला के सामने मैं झाड़ापोंछा करुँगी ?''[3]

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'अनोखेलाल ने नौकर रखा', पृष्ठ-122
2. वही, पृष्ठ - 128
3. वही, पृष्ठ - 128

जब रामू बीमार पड़ता है तब भी लक्ष्मी उसे गाँव जाने की इजाजत देने के बजाए घर पर ही रहने हो कहती है और डाक्टरों से उसका इलाज करवाती है। उसे डर है कि, बाद में दूसरा नौकर मिलना कठिन है। लक्ष्मी को बाद में उर्मिला की चिठ्ठी मिलने पर पता चलता है कि, उर्मिला दो महिने बाद आ सकेगी। लक्ष्मी निराश हो जाती है। वह लाया हुआ सामान वापस कर देना चाहती है। लेकिन नौकर को दो महिने तक काम पर रखना ही चाहती है क्योंकि इतनी मुश्किल से मिला नौकर फिर से दो महिने बाद मिलेगा या नहीं यह कोई बता नहीं सकता।

इस तरह पुणतांबेकर ने एकांकी के माध्यम से झूठी प्रतिष्ठा का दर्शन कराया है। प्रस्तुत एकांकी आधुनिक युग की झलक है। जहाँ नौकर घर में रखना प्रतिष्ठा की बात समझी जाती है। नौकर को घर में टिकाए रखने के लिए उस नौकर की ही सेवा करनी पड़ती है। नौकर रखने की आर्थिक स्थिति न होते हुए भी केवल लोगों को दिखाने के लिए घर में नौकर रखने का दिखावा किया जाता है।

इस एकांकी का अध्ययन करने पर कह सकते हैं कि जीवन एक दिखावा बनकर रह गया है। जहाँ हर चीज के पीछे जरुरत कम और दिखावा ज्यादा होता है। पड़ोसवाले के घर में वह चीज है, तो हमारे घर में भी होनी ही चाहिए - यह वृत्ति बढ़ती जा रही है। जीवन की सच्चाई से मूँह मोड़कर हर कोई खुद को श्रेष्ठ साबित करने की कोशिश में लगा है। प्रस्तुत एकांकी वैसे पढ़ने पर हास्यात्मक लगती है लेकिन इसका दूसरा पहलू देखे तो यह व्यक्ति-स्वभाव की कमजोरी पर व्यंग्य करता है।

3.1.9 'अनोखेलाल बीमार पड़ते हैं' - हास्यात्मक व्यंग्य :

यह एक हास्य से भरपूर एकांकी है। पत्नी के द्वारा की जानेवाली खरीददारी और पैसों के खर्चे को बचाने के लिए अनोखेलाल बीमार पड़ने का नाटक करते हैं। इस नाटक में अनोखेलाल के दोस्त भी उसका साथ देते हैं। बीमारी का नाटक करते हुए अनोखे को सब मिलकर घर छोड़ आते हैं, जिसके कारण लक्ष्मी को उनके नाटक के बारे में कुछ पता नहीं चलता। अनोखेलाल ठंड लगने का नाटक करता है, तब लक्ष्मी उसे रजाई ला कर देती है और रजाई ओढाकर अनोखे को सुला दिया जाता है। वह रजाई को टालने के लिए लक्ष्मी से कहता है -

''अनोखे : मुझे रजाई वजाई कुछ नहीं चाहिए लक्ष्मी। बस ऐसे ही पड़ा रहने दो।

लक्ष्मी : मैं कहती हूँ जब तक पसीना नहीं आएगा बुखार निकलेगा कैसे बदन में से ? हाँ, ओढ़ो यह रजाई। ..... रहने दो यह कम्बल भी रहने दो। उसके ऊपर से लो यह रजाई।

अनोखे : नहीं लक्ष्मी, मैं मारे पसीने के मर जाऊँगा।

लक्ष्मी : बेकार की बच्चों जैसी बाते न करो। चुपचाप पड़े रहो। हाँ बस ऐसे। हाँ, सिर भी ढक लो।''[1]

इस प्रकार से अनोखे को पैसे बचाने के लिए बीमारी का नाटक करना पड़ता है। रजाई ओढ़ा देने पर अनोखे रजाई के अंदर से कहता है कि मेरा यहाँ दम घूटा जा रहा है। लेकिन लक्ष्मी उसकी एक भी बात नहीं सुनती और उसे पीने के लिए काढ़ा लाकर देती है। काढ़ा पीना अनोखे को जहर पीने जैसा लगता है। इसके बाद लक्ष्मी डॉक्टर को बुलाकर अनोखे को इंजेक्शन दिलवाती है। इंजेक्शन की बात सुनकर बीमारी का नाटक करता हुआ अनोखे भागने की कोशिश करता है। लेकिन डॉक्टर और लक्ष्मी मिलकर उसे रस्सी से बाँधकर इंजेक्शन देते हैं।

बाद में उसी समय घडी में छ: बजते हैं और अनोखे चेन की साँस छोडता है। साडी की सेल लगी हुई मोटरें छ: बजे जानेवाली थी और इसलिए वह छ: बजे तक बीमारी का नाटक करनेवाला था। छ: बजते की अनोखे बीमारी का नाटक बंद कर अच्छा हो जाता है। लक्ष्मी समझती है कि यह सब डॉक्टर का कमाल है और इसलिए वह डॉक्टर के लिए चाय बनाने अंदर चली जाती है। उसी बीच डॉक्टर अनोखे को बताता है कि, वह अनोखे की बीमारी के बारे में अनोखे के दोस्त मि. वर्मा से जान चुका है। साथ ही दिया हुआ इंजेक्शन भी डिसिल्ड वॉटर का था। छ: बजते ही अनोखे के ठीक हो जाने पर डॉक्टर चला जाता है। तब लक्ष्मी अनोखे को बताती है -

''लक्ष्मी : मैं कितनी डर गई थी। भगवान ने जल्दी ही कृपा की। ... हाँ, इस गड़बडी में यह तो कहना भूल ही गई कि मैं साड़ी खरीद लाई हूँ। ...

अनोखे : (आश्चर्य से) - साड़ी।

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'अनोखेलाल बीमार पडते हैं', पृष्ठ-135-136

लक्ष्मी : हाँ। मैंने सोचा वायदा करके भी आप आयेंगे नहीं। आदत जो है। और दूकानें तो आज ही जाने को थीं। सो मनोरमा के साथ एक बजे ही जाकर खरीद लाई एक साड़ी।''[1]

यह सुनकर अनोखे सर पकड़ लेते हैं और अपनी की हुई मेहनत पर सारा पानी फिर गया है, यह देखकर अफसोस जताते हैं।

प्रस्तुत एकांकी किसी खास उद्देश्य का वहन नहीं करता है। लेकिन यह एकांकी साधारण व्यक्ति की रोज-मर्रा की छोटी-मोटी घटनाओं को उजागर करता है। साधारण व्यक्ति को अपनी ख्वाहिशों को पूरा करने के लिए बहुत सोच-विचार कर पैसा खर्च करना पड़ता है, इस वास्तव को यहाँ हास्यमय ढंग से पुणतांबेकर ने प्रस्तुत किया है। साथ ही यह दिखाया है कि खर्च को बचाते-बचाते वह किस प्रकार जीवन के आनंद से दूर हो जाते हैं।

3.1.10 'अनोखेलाल का सेवाव्रत' - एक सामाजिक व्यंग्य :

इस एकांकी में अनोखेलाल एक समाजसेवी के रूप में दिखाई देते हैं। अनोखे ने समाजसेवा का व्रत लिया है और किसी का कोई भी काम वह निस्स्वार्थ भाव से करते हैं। रास्ते में पड़े हुए केले के छिलके उठाकर बाजू में फेंकना, कभी किसी को बोझ उठाने में मदद करना, किसी बीमार को अस्पताल पहुँचाना आदि काम अनोखेलाल खुशी-खुशी करते हैं। कभी-कभी तो किसी भटके हुए को सही पते पर छोड़ कर आते हैं। इस तरह से समाजसेवा करते अनोखेलाल को देखकर कोई उनके काम की प्रशंसा करता है तो कोई उनकी ठिठोली करता है।

यहाँ पर पुणतांबेकर ने समाज की फायदा उठानेवाली वृत्ति पर व्यंग्य किया है। इसी संदर्भ में एकांकी में एक प्रसंग आ गया है। अनोखेलाल सब समाजकार्य करने के बाद जब बस से घर जा रहा होता है तब बस में बैठा हुआ एक व्यक्ति बस में एक औरत खड़ी रहते देख कर वह अनोखे से कहता है - 'अरे भाई अनोखेलाल, वह औरत खड़ी है उसे बैठने को सीट खाली कर दो।' - उस आदमी की यह बात सुनकर बस में सफर कर रहें दो व्यक्ति आपस में बात करते हैं -

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ'-'अनोखेलाल बीमार पड़ते हैं', पृष्ठ-140-141

''दूसरा व्यक्ति : क्या बात है यह आदमी ऐसा क्यों कह रहा है ? उस औरत को खुद न सीट देकर उससे क्यों कह रहा है।

तिसरा व्यक्ति : बात यही है जिससे सीट देने के लिए कहा गया है वह आदमी समाजसेवी है। कहनेवाला आदमी यह बात जानता है। इसलिए उसने अपनी सीट न देकर उससे देने के लिए कहा।

दूसरा व्यक्ति : यह भी खूब है। समाजसेवा न हुई दंड हो गया। एक निरपराध को दिया जाने वाला दंड।''[1]

इस प्रकार से समाज उसे मिलने वाली सुविधा का दुरूपयोग करता है। अपने काम बनते देख वह आलसी वृत्ति का बन जाता है। प्रस्तुत एकांकी अनोखेलाल के सच्चे समाजसेवी के माध्यम से इसी बात को स्पष्ट करने की कोशिश की है। अनोखेलाल थके-हारे घर पहुँचते हैं। वह दिन भर किसी स्कूली प्रोग्राम की टिकटें बेच रहा था, क्योकिं इतवार था और अन्य दिन इतना समय नहीं मिलता। साथ में आते हुए कुछ सेवाकार्य भी करता आया था। थका-हारा अनोखे खाना खा ही रहा था कि, कोई आ कर किसी बूढ़े की मरने की खबर देता है और साथ ही उसे अर्थी में शामिल होने के लिए बुलावा दे कर खुद वहाँ से निकल जाता है। बूढ़े की अर्थी को कंधा देने वाले कम पड़ रहे थे। अनोखे खाना अधूरा छोड़ कर चला जाता है। जब लौटकर आता है तब बुखार से तप रहा होता है। इतने में पड़ोस की मालती अपने कपड़े लाँड्री में डलवाने को अनोखे को कहती है। लक्ष्मी के मना करने पर अनोखे के सेवाव्रत पर ऊँगली उठाती है -

''लक्ष्मी : तुम नहीं जाओगे। यह वह मालती है जिसने कल बेबी को चोट लगने पर टिंक्चर देने से मना कर दिया था।

मालती : तो इसका मतलब यह हुआ जिससे स्वार्थ पूरा होता है उसी की सेवा करते हैं ये। फिर निष्काम सेवा का ढिंढोरा क्यों पीटते हैं।''[2]

इस प्रकार से लोग अनोखे को काम करने पर मजबूर करते हैं। मालती अनोखे को कपड़े लाँड्री में देने के लिए कहती है क्योंकि अनोखेलाल ने समाजसेवा का व्रत लिया है,

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर -'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ'-'अनोखेलाल का सेवाव्रत', पृष्ठ-148
2. वही, पृष्ठ -154

जब कि मालती का पति अपने दोस्तों के साथ ब्रिज खेलने में मग्न है। अनोखेलाल की हालत इतनी खराब है कि, चल भी नहीं सकते फिर भी लाँड्री जाने को तैयार हो जाते हैं। लेकिन कमजोरी के कारण एकदम गिर पड़ते हैं। लक्ष्मी उन्हें उठाकर लिटा देती है। मालती यह सब देख कर भी उसे उनका नाटक मानकर वहाँ से चली जाती है।

इस प्रकार से पुणतांबेकर ने समाज की स्वार्थी वृत्ति का चित्रण किया है। अनोखेलाल जैसा समाजसेवी मानो समाज के लिए एक मुफ्त का नौकर मिल गया है। सभी लोग अपने छोटे-मोटे काम खुद न कर के उन कामों के लिए भी अनोखेलाल को ही बुलाते हैं। लोग अपना काम साधने के लिए समाजसेवी को भी नहीं छोड़ते। उसकी सेवाव्रत से कुछ सीख लेने के बजाए उस समाजसेवी को ही काम में लगाते हैं, उसका फायदा उठाना चाहते हैं। इस प्रकार से पुणतांबेकर ने लोगों कि फायदा उठाने की वृत्ति पर व्यंग्य किया है।

3.1.11 'अनोखेलाल चांदनी रात में' - कौटुंबिक हास्य-व्यंग्य :

प्रस्तुत एकांकी घर-गृहस्थी में फँसे लोगों की मानसिकता को हमारे सामने रखती है। गृहस्थी में फँसा हुआ व्यक्ति चाहकर भी उससे भाग नहीं सकता। अनोखेलाल दोस्तों के साथ मिलकर चांदनी रात में सैर पर जाने का प्रोग्राम बनाते हैं। गोपाल और मदन अपनी-अपनी बीबियों को लेकर आनेवाले होते हैं।

लक्ष्मी बेबी को बुखार होने के कारण सैर पर आने से मना कर देती है। लेकिन अनोखे उसे जैसे-तैसे मनाकर सैर के लिए राजी कर लेते हैं। जब दोस्तों के घर जाते हैं तो वह दोनों भी किसी न किसी कारण से आने से मना कर देते हैं, तब लक्ष्मी अनोखे से कहती है -

''लक्ष्मी : इन लोगों की वजह से ही हठ कर रहे थे न तुम। हम लोगों को तो कारण भी था। लेकिन ये लोग तो कोई कारण न होते हुए भी नहीं आए।''[1]

आख़िर लक्ष्मी और अनोखे दोनों ही सैर पर चले जाते हैं। दोनों 'रोज गार्डन' में आते हैं लेकिन लक्ष्मी का सारा ध्यान घर और बेबी की ओर लगा रहता है। अनोखे उससे प्यार भरी बातें करना चाहता है लेकिन लक्ष्मी कभी घर के किराये के बारे में तो कभी अनोखेलाल चावल लाना भूल गए उसके बारे में बोलती रहती है। अनोखेलाल उससे कहता है -

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'अनोखेलाल चांदनी रात में', पृष्ठ-164

"अनोखे : लक्ष्मी, तुम कितनी सुन्दर हो। देख रही हो उस चांद की तरफ। तुम्हारे सामने वह फीका है।

लक्ष्मी : जिस चाँद के लिए हम यहाँ आए है उसी को फीका बता रहे हो।"[1]

इस प्रकार से अनोखे लक्ष्मी को सैर पर तो ले आता है लेकिन लक्ष्मी का मन घर पर, बेबी पर ही लगा रहता है। उसके मन से बेबी का खयाल नहीं जा पाता। आखिर अनोखे अपनी सैर को अधूरा छोड़ लक्ष्मी के साथ घर चले आते हैं।

यह एकांकी किसी खास उद्देश्य से नहीं लिखी गई। पुणतांबेकर ने हलके-फुलके विषयों को लेकर मनोरंजन की दृष्टि से भी लेखन किया है। यह उन्हीं एकांकियों में से एक है।

3.1.12 'चूहें' - नेताओं पर प्रतीकात्मक व्यंग्य :

यह एकांकी नेताओं को केंद्र बनाकर लिखा गया है। इस एकांकी में पुणतांबेकर ने चूहों को माध्यम बनाकर उनकी हर करतूत की तुलना नेताओं की करतूतों से की है। इसमें दिखाया गया है कि अनोखेलाल, चूहों ने मचाई उधम से परेशान है। चूहों ने घर की एक भी चीज को नहीं छोड़ा है। पोपटलाल से बातें करते हुए उन्हें पता चलता है कि, रामजीलाल चोरी का धंदा करता है और उसका एक चावल का ट्रक देखा गया है। तब अनोखे सोचता है कि व्यापारी भी चूहों की तरह होते हैं, दूसरों की मेहनत पर जीते हैं। इस एकांकी में चूहों और नेताओं की तुलना की गई है। अनोखे और लक्ष्मी के संवाद यहाँ द्रष्टव्य हैं -

"लक्ष्मी : तुम नहाओ, मैं तब तक इसे (धोती) सी देती हूँ।

अनोखेलाल : हम कितना ही सीते रहें, ये बराबर काटते रहेंगे। क्योंकि काटना, दूसरों को नुकसान पहुँचाना इनका धर्म है।

लक्ष्मी : कपडे सुख जाने पर मैं संदुक में रख दिया करुँगी।

अनोखेलाल : तुम संदुक में रखो या कहीं भी। उन्हें काटना होगा तो ये संदूक में भी छेद कर देंगे। इनका तो बस एक ही उपाय है। जहर की गोलियाँ खिलाकर खत्म कर दो।"[2]

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'अनोखेलाल चांदनी रात में', पृष्ठ-167
2. वही - 'चूहें', पृष्ठ-173

इस प्रकार से चूहों की आदतों को बताकर आगे नेता, व्यापारी आदि के प्रसंग जोड़े गए है जिनसे नेता, व्यापारी आदि लोगों की चूहा-वृत्ति स्पष्ट होती है।

प्रस्तुत एकांकी में चूहों की उपमा नेताओं को दी गई है। घर में चूहें जिस प्रकार चिजों को खुरेदते हैं, उसी प्रकार नेता भी समाज को खुरेदते रहते हैं और अपनी जेबें भरते हैं। इन बड़े-बड़े नेताओं के आगे हमारे पुलिस की भी एक नहीं चलती। हमारी सरकार भी इनका कुछ नहीं बिगाड़ पाती। हमारी सरकार अहिंसा धर्म का पालन करनेवाली है सो वह इन गुंडे, बदमाश नेताओं को गोली से नहीं उडा सकती। हाँ, लेकिन नेताओं की गोलियाँ समाज को रोज जख़्मी कर रही है। ये नेता कभी-कबार कानून की पकड़ में आने पर बड़ी चालाखी से छूट जाते हैं और उसके साथी जो उसके इशारे पर काम करते हैं कानून की गिरफ्त में फँस जाते हैं। नेताओं की इस आदत को भी अनोखेलाल ने चूहों के माध्यम से स्पष्ट किया है। अनोखेलाल कहते हैं कि, निकल भागने के लिए भी चूहों को मोटा होना चाहिए।

इस प्रकार से यह एकांकी नेताओं की वृत्ति पर चूहों की वृत्ति का प्रतीकात्मक व्यंग्य करता है।

3.1.13 'अनोखेलाल खाना बनाते हैं' - एक हास्यात्मक व्यंग्य :

अनोखेलाल लक्ष्मी के हाथ के बने हुए खाने में कोई न कोई नुक्स निकालते रहते हैं। लक्ष्मी के यह कहने पर कि खुद ही खाना बनाकर दिखाओ तो उसकी इस बात पर वह अच्छा खाना बनाकर दिखाने का बीड़ा उठाते हैं -

"अनोखे : तो क्या तुम समझती हो खाना बनाना तुम्हीं को आता है मुझे नहीं ? आज तक कभी बनाया नहीं इसलिए इस भूल में न रहो कि मैं कुछ जानता ही नहीं।"[1]

अगले ही दिन इतवार होने के कारण सुबह चाय से लेकर अनोखेलाल खाना बनाने में जूट जाते हैं। चाय ठीक सें नहीं बना पाते। कभी सब्जी काटते वक्त ऊँगली काट लेते हैं। पानी की बाल्टी लाते वक्त गिर पड़ते हैं। रोटियाँ बनाते वक्त चूल्हा बार-बार बूझ जाता है। चूल्हे की राख सारे शरीर पर उड़ जाती है। घर में आने-जाने वालों का तकाजा लगा रहता है, इसी चक्कर में दो रोटियाँ जल जाती है। किसी तरह मेहमानों को खिसकाकर खाना बना

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर -'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ'-'अनोखेलाल खाना बनाते हैं', पृष्ठ-187

लेते हैं। लक्ष्मी के हाथों गोराचाची के यहाँ परीक्षा करने के लिए कटोरी भर साग भेज देते हैं। लक्ष्मी और अनोखे खाना खाने बैठने वाले ही होते हैं कि गोराचाची तमतमाती हुई आती है और लक्ष्मी से कहती है -

"गोराचाची : अरे, क्या डाला है इन दाल - सब्जियों में ? मुँह में डालते ही थूक देनी पड़ी। लगता है पत्थर पीसकर डाल दिया है। देखो, बड़ेबूढ़ों के साथ ऐसा मजाक करना अच्छा नहीं। कहे देती हूँ।(चली जाती है।)"[1]

लक्ष्मी खाना चखकर देखती है तो पता चलता है कि, अनोखे ने नमक की जगह रंगोली डाल दी है। हलुए में भी शक्कर की जगह नमक डाल दिया है। अनोखेलाल कहते हैं, मुझे क्या पता किस डिब्बे में क्या रखा है और आख़िर अपनी हार मान लेते हैं और लक्ष्मी को जल्दी से दूसरा खाना बनाने को कहते हैं।

यहाँ पर पुणतांबेकर व्यंग्य के बदले हास्य के माध्यम से यह बताते हैं कि किसी भी काम के विषय में बोलना और उस काम को कर दिखाना दो अलग बाते हैं। बोलने से भी करना ज्यादा कठिन होता है। उस काम की हमें पूरी जानकारी हो तभी हम उस काम को बखूबी निभा सकते हैं, नहीं तो अनोखेलाल जैसी स्थिति हो जाती है।

3.1.14 'अनोखेलाल का विवाह दिन' - कौटुंबिक हास्य-व्यंग्य :

अनोखेलाल अपने 'विवाह दिन' के मौके पर पत्नी लक्ष्मी को किसी सुंदर जगह ले जा रहे हैं। सारी तैयारियाँ हो रही हैं, पॅकिंग हो रही है। लक्ष्मी अपनी बहुत-सी साड़ियाँ बॅग में भर लेती है। अनोखेलाल लक्ष्मी को टोकते हैं कि इतनी साड़ियों का क्या करोगी? तब लक्ष्मी कहती है एकाध ज्यादा ले ली तो क्या फरक पड़ता है ? इसी तकरार से बात बढ़ते-बढ़ते लक्ष्मी के भाई साहब, भाई साहब का प्रेम विवाह, और विवाह में लिया दहेज आदि बातों पर आ पहुँचती है। अनोखेलाल कम दहेज मिलने की बात को लेकर लक्ष्मी से झगड़ते हैं।

लक्ष्मी भी अपनी मैट्रिक की परीक्षा देने, संगीत सीखने, सिलाई-कढ़ाई करने, नाटक में काम करने आदि में से एक भी इच्छा पूरी न करने की बात को लेकर अनोखे को

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'अनोखेलाल खाना बनाते हैं', पृष्ठ - 197

टोकती है। तो अनोखेलाल भी अपनी शादी हो जाने के कारण ही अपने कहानी लेखन, फुटबॉल, हॉकी, शतरंज, ब्रिज आदि बातों को पूरा न कर सकने पर अफसोस जताते हैं। इन बातों के लिए दोनों एक-दूसरे को जिम्मेदार ठहराते हैं। एक-दूसरे की खिल्ली उड़ाते हैं। लक्ष्मी कहती है मैं जब स्कूल में स्टेज पर काम करती, तो लोग कहते यह एक दिन बड़ी कलाकार बनेगी। इसके जवाब में अनोखे कहते हैं -

"अनोखे : बच्चों को प्रोत्साहन देने के लिए ऐसा ही कहा जाता है लक्ष्मी। फिर इसमें उनका जाता क्या है ? औरतों को तो बस मेरी राय में एक ही कला आनी चाहिए।

लक्ष्मी : कौन सी ?

अनोखे : पाकशास्त्र की कला।"[1]

अनोखे और लक्ष्मी के आपसी नोंक-झोंक में गाड़ी का वक्त निकल जाता है। दोनों झगड़ते हुए यह भी भूल जाते हैं कि, उन्हें बाहर जाना है। जब सामनेवाली घड़ी बंद पड़ गई है यह मालूम होने पर दूसरी घड़ी में देखते हैं तो पौने दो बज रहे होते है। गाड़ी दो बजे की होने के कारण उस वक्त तक पहुँचने की कोई संभावना नहीं थी। इसलिए बाहर जाने का प्रोग्राम कॅन्सल कर देते हैं और विवाह दिन यूँ ही तू-तू मैं-मैं करते हुए घर पर ही मनाते हैं।

यह एकांकी मनोरंजनात्मक है। इसका उद्देश्य पाठकों का मनोरंजन करना है, लेकिन इसमें किस प्रकार पति-पत्नी में झगड़े की शुरुआत होती है, इस बात को लेकर पुणतांबेकर ने लेखन किया है।

उपर्युक्त एकांकियों के कथ्य का अध्ययन करने के पश्चात् निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि पुणतांबेकर अपने समाज के प्रति सजग रहे हैं। उनके लेखन में सामाजिक समस्याएँ तथा राजनीतिक समस्याएँ आदि का समावेश किया गया दिखाई देता है। एकांकियों के माध्यम से सामाजिक समस्याओं को, राजनीतिक दाँव-पेचों को पाठकों के सामने रखा गया है। कुल 14 एकांकियों में नौ एकांकी अनोखेलाल नामक पात्र को लेकर लिखे गए हैं। जिनमें कुछ गंभीर विषयों का उद्घाटन करते हैं, तो कुछ हलके-फुलके विषयों को लेकर लिखे गए हैं। इस

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'अनोखेलाल का विवाह दिन', पृष्ठ-208

एकांकी संग्रह के चार-पाँच एकांकियों को छोड़ा जाए, तो अन्य एकांकी हास्य-व्यंग्यात्मक शैली से सामाजिक विसंगतियों पर प्रकाश डालते हैं। इनमें - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ', 'तितली', 'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज', 'इन्टरव्यू : एक चुनाव के उम्मीदवार से', 'रंग में भंग', 'इन्टरव्यू की तैयारी', 'अनोखेलाल का सेवाव्रत', 'चूहें', 'अनोखेलाल ने नौकर रखा' आदि एकांकी आ जाते हैं। इन एकांकियों में डॉक्टरों की पूँजीवादी दृष्टि, आधुनिकता के कारण बिखरते परिवार, मध्यवर्गीय आदमी की मानसिकता, युवक-युवतियों की बदलती मानसिकता, पैसों के बलबुते पर कॉलेज कमेटी का अध्यक्ष बने सेठजी, समाज की वृत्ति, राजनीतिक भ्रष्टाचार और ऊपरी दिखावे पर व्यंग्य किया गया है।

3.2 विवेच्य एकांकी संग्रह की एकांकियों का शिल्प -

'शिल्प' का शब्दगत अर्थ है कारीगरी या हाथ से बनाई हुई कारीगरी। इसका कोशगत अर्थ - " 1) कोई वस्तु हाथ से बनाकर तैयार करने का काम। दस्तकारी। कारीगरी। (2) कला-संबंधी व्यवसाय।"[1] 'हिंदी शब्द सागर' में श्यामसुंदर दास ने शिल्प का अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है - "शिल्प - संज्ञा पु.(सं.) 1. हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम। दस्तकारी। कारीगरी। हुनर। जैसे, बरतन बनाना। कपड़े सीना। गहने गढ़ना आदि। 2. कला संबंधी व्यवसाय, जैसे - अब इस नगर के कई शिल्प नष्ट हो गए हैं। 3. दक्षता। पाटव। कौशल। चातुर्य (को.)। 4. निर्माण। सर्जन। सृष्टि। रचना(को.)। 5. आकार। आवृत्ति। रूप (को.)। 6. अनुष्ठान। क्रिया। धार्मिक कृत्य(को.)। 7. यज्ञादि में प्रयुक्त स्रुवा(को.)।"[2] इस प्रकार से दिया गया है। लेकिन शिल्प का साहित्य की दृष्टि से विचार करें तो साहित्य में प्रस्तुत विषय साहित्यकार ने किस प्रकार से, किस ढंग से व्यक्त किया है, उस भावाभिव्यक्ति को, योजना को शिल्प कहा जाता है।

शंकर पुणतांबेकर एक व्यंग्यकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके प्रारंभिक लेखन में 'हास्य-व्यंग्य' साहित्य का विशेष महत्त्व है। उनमें से एक हैं 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ'(एकांकी संग्रह)। पुणतांबेकर ने अपने साहित्य में आगे चलकर केवल व्यंग्य को स्थान दिया और उनका हास्य से नाता छूट गया। हिंदी साहित्य में एक व्यंग्यकार के रूप में पुणतांबेकर जाने जाते हैं। उनकी प्रारंभिक रचनाओं में कुछ कमियाँ रह गई हैं। ये कमियाँ ही इस

1. सं. श्री. नवल जी - नालंदा विशाल शब्द सागर, पृष्ठ - 1344
2. सं. श्यामसुंदर दास - हिंदी शब्द सागर (भाग-9), पृष्ठ - 4751

एकांकी संग्रह की सफलता में बाधक बनी है। स्वयं पुणतांबेकर भी इस रचना को श्रेष्ठ नहीं समझते। कुछ एकांकियों को छोड़कर विवेच्य एकांकी संग्रह की एकांकियाँ शिल्प की दृष्टि से कमजोर मालूम पड़ती है। फिर भी इस रचना में जिन-जिन शिल्पों का निर्वाह हुआ है वह इस प्रकार से देखा जा सकता है -

3.2.1 **भाषा शिल्प :**

संपूर्ण एकांकी संग्रह ही हास्य-व्यंग्यात्मक भाषा में लिखा गया है। इनमें शीर्षक एकांकी 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ', 'रंग में भंग', 'चूहे', 'इन्टरव्यू : एक चुनाव के उम्मीदवार से', 'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज' आदि एकांकियों मे अच्छा खासा व्यंग्य बन पड़ा है। इस एकांकी संग्रह के अन्य एकांकी हास्यप्रधान बन पड़े हैं जो हलके-फुलके विषयों को लेकर लिखे गए हैं। इनमें भी व्यंग्य कुछ मात्रा में दिखाई देता हैं, लेकिन वह हास्य की भरमार से ओझल हो गया है। पुणतांबेकर का लक्ष्य व्यंग्य और मनोरंजन का रहने के कारण एकांकियों में व्यंग्यात्मक और हास्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है।

बालेन्दु शेखर तिवारी इसकी भाषा के विषय में लिखते हैं - "डॉ. शंकर पुणतांबेकर की हास्य एकांकियों के संकलन 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' (1972) में विनोद की क्षमताओं को सहज स्थितियों और भाषा के कौशल के सहारे ही अभिव्यक्ति मिली है।"[1] इस प्रकार से केवल भाषा ही वह माध्यम है जो समस्त एकांकियों को एक दिशा प्रदान करती है।

3.2.1.1 **संवाद शिल्प :-**

एकांकियों में संवाद अपना अलग महत्व रखते हैं। इस एकांकी संग्रह में अनोखेलाल पात्र को लेकर लिखी गई एकांकियों के संवादों में गतिमानता नहीं दिखाई देती है। संवाद का कार्य कथा का विकास करना है लेकिन यहाँ पर संवाद वो कार्य नहीं कर पाए हैं। लेकिन बाकी की एकांकियों में संवाद प्रयोग योग्य बन पड़ा है, जो कि उद्देश्य को पाठकों के सम्मुख रख देता है। संवादों में व्यंग्यात्मकता, हास्यात्मकता का प्रयोग किया गया है। जिसका स्वरूप-विवेचन द्वितीय अध्याय में किया गया है।

---

1. डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी - हिंदी का स्वातंत्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य, पृष्ठ - 185

3.2.1.2 अलंकारों का प्रयोग :-

प्रस्तुत एकांकी संग्रह में अलंकारों का प्रयोग किया गया है। संवादों की रचना में वक्रोक्ति, उपमा आदि अलंकारों का निर्माण हो गया है।

(1) वक्रोक्ति अलंकार :

कहनेवाला किसी बात किसी एक अर्थ से कहता है और सुननेवाला उस बात का कोई दूसरा ही अर्थ निकाले तब वहाँ 'वक्रोक्ति' अलंकार हो जाता है।

प्रस्तुत एकांकी संग्रह में पुणतांबेकर ने कहीं-कहीं वक्र कथन के प्रयोग से हास्य निर्मिति, व्यंग्य निर्मिति की है। 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ', 'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज', 'इन्टरव्यू की तैयारी' आदि एकांकियों में वक्रोक्ति का प्रयोग किया गया है। जैसे कि यहाँ पर कुछ उदाहरण प्रस्तुत है -

"कैलाश : आज तुम्हारा स्टूल और यूरिन भी दिखाने पहूँच गया है।

किशोर : क्यों ? मेरा स्टूल और यूरिन क्यों मंगवा लिया है ? क्या स्टूल और यूरिन की आजकल बहुत डिमांड है ?

कैलाश : बीमार की हर चीज को हम टेस्ट करते हैं।

किशोर : (हँसते हुए) तो तुम मेरे स्टूल और यूरिन को टेस्ट करोगे ?

कैलाश : हाँ। (लेकिन फौरन अर्थ समझकर उसे मारने जैसा हाथ उठाते हुए) - किशोर, नालायक गधे क्या बकता है।"[1]

इसी एकांकी का और एक उदाहरण है -

"शांती : (सिरिंज लेकर) - हाँ, हाथ करो तो आगे। (खून लेती है।)
अच्छा, अब आराम करो। मैं दवाखाने जाती हूँ। (जाने लगती है।)

किशोर : देखो, देखो, जरा एक बात सुनती जाओ।

शांती : (पास आकर) - क्या हैं ?

किशोर : दवा खाने न जाओ दवा देने जाओ।"[2]

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ', पृष्ठ - 19
2. वही, पृष्ठ - 26

'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओं' में वक्रोक्ति का प्रयोग बहुत जगह किया गया है। 'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज' में वक्रोक्ति की निर्मिति हो गई है -

''दीनानाथ : मैं हूँ, दीनानाथ।

अनोखे : कहो कैसे चले आए ?

दीनानाथ : यही पैदल। बात यह हुई कि मैं इधर जाने को निकला तो देखा साइकल पंक्चर थी।''[1]

'रंग में भंग' एकांकी में भी कुछ मात्रा में वक्रोक्ति का प्रयोग किया गया है। प्रोफेसर भार्गव के विषय में छात्रों के संवाद देखे जा सकते हैं -

''मेहता : लेकिन उसका इतिहास का ज्ञान तो बहुत अच्छा है।

खन्ना : खाक अच्छा है। एक दिन एक लड़के ने पूछा था आठवें हेनरी की छः रानियों के नाम क्या हैं तो वह उस लड़के पर बिगड़ पड़ा। कहने लगा - उन रानियों से तुम्हें क्या करना है। वे परीक्षा में नहीं आ रही है।

मेहता : हाँ हाँ, याद आया मुझे भी। इस पर उस लड़के ने जबाब दिया - सर, हमें खेद इसी बात का है कि वे परीक्षा में नहीं आ रही हैं, वरना हम उन्हीं को लेकर परीक्षा भवन से भाग जाते।''[2]

इस तरह से वक्रोक्ति का प्रयोग कर अध्यापकों की भी केवल परीक्षा की दृष्टि से अध्यापन करने की दृष्टि पर व्यंग्य किया है। 'इन्टरव्यू की तैयारी' एक सफल वक्रोक्ति के प्रयोग से पूँजीवादी अकलमंद लोगों के अज्ञान की असलियत को सामने रखता है।

''सेठजी : अरे महाकाली नहीं। मैं महादेवी के बार में पूछ रहा हूँ।

सेठानी : क्या यह महाकाली से भी बड़ी है ?

सेठजी : यह तो मैं नहीं जानता। लेकिन साहित्य के इतिहास में उसका नाम है। कविता करती है। प्रसाद का नाम सुना है।

इस प्रकार पुणतांबेकर ने वक्रोक्ति के माध्यम से संवादों द्वारा अपने उद्देश्य को प्रस्तुत किया है। वक्रोक्ति के कारण संवादों के प्रति ध्यान आकर्षित होता है। साथ ही इसके प्रयोग के कारण हास्य तथा व्यंग्य की निर्मिति भी हो गई है।

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज', पृष्ठ-26
2. वही - 'रंग में भंग', पृष्ठ - 78-79

(2) उपमा अलंकार :

'जहाँ दो विभिन्न वस्तूओं में रूप, गुण, आकृति आदि को लेकर समता प्रदर्शित की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार की निर्मिति होती है।' 'रंग में भंग एकांकी में कुछ जगह उपमा अलंकार का प्रयोग किया गया है, जैसे -

"खन्ना : रागिनी की बराबरी कोई लड़की नहीं कर सकती मेहता। वह इस धरती की परी है परी।"[1]

"खन्ना : कक्षा में रागिनी सब लड़कियों मे चाँद की तरह चमकती है, तुमने कक्षा में उसकी ओर कभी देखा नहीं शायद।"[2]

इस प्रकार से खन्ना रागिनी को कभी परी की उपमा देता है तो कभी चाँद की। पुणतांबेकर ने इस एकांकी संग्रह में किसी खास अलंकार आदि का प्रयोग नहीं किया है। केवल कुछ एकांकियों में ही जैसे कि उपर उल्लेख किया गया है, इनमें वक्रोक्ति, उपमा का निर्माण हो गया है। पुणतांबेकर के पास विडंबनाओं को पकड़ने की पैनी दृष्टि है। उन्होंने विवेच्य एकांकियों में अपनी चुस्त भाषा में विषय को प्रस्तुत करने की प्रभावी शैली का परिचय दिया है। वाक्य भी सरल किंतु व्यंग्य निर्मिति करनेवाले हैं। संवाद पात्रानुकूल बन पड़े हैं।

3.2.2 रंगमंचीय निर्देश -

चौदह एकांकियों में से केवल पाँच एकांकी ऐसे है जिनकी शुरुआत में पुणतांबेकर ने रंगमंच संबंधित निर्देश दिए हैं। जो एकांकी की शुरुआत में दृश्य संकेत के रूप में देखे जा सकते हैं। 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' एकांकी के पूर्व भी दृश्य-संकेत दिया गया है।

(एक बंगले का ड्राइंग-रुम। टेबल पर खाना लगा हुआ है और पिताजी शांति और उषा बैठे हुए है। परदा उठता है उस समय घड़ी में एक बजता है।)[3]

इस प्रकार एकांकी के पूर्व के वातावरण की जानकारी मिलती है। यह एकांकी दो दृश्यों में विभाजित की गई है। दूसरे दृश्य की शुरुआत से पहले भी दृश्य संबंधी संकेत दिए गए हैं -

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'रंग में भंग', पृष्ठ-76
2. वही, पृष्ठ - 78
3. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ', पृष्ठ - 11

(दो दिन के बाद की शाम। एक कमरे में किशोर पलंग पर टिका हुआ अख़बार पढ़ रहा है। पलंग के सिरहाने एक टीपाय पर कुछ शिशियाँ रखी हैं और कुछ फल की तश्तरियाँ। परदा खुलने के कुछ ही देर बाद कैलाश का प्रवेश। अपने साथ मेडिकल बॉक्स लिए है।)[1]

इस दृश्य संकेत को पढ़ने से पाठक जान जाता है कि शायद कोई बीमार है। 'तितली' एकांकी की शुरुआत में भी दृश्य संकेत दिया है, - (रतना का कमरा। कमरे में आधुनिक ढंग की सजावट है। रेडिओ, पुस्तकों की अलमारियाँ। एक छोटी-सी टेबल कमरे में रखी है। उसके पास एक छोटी लिखने की मेज है। उस पर लिखने का सभी सामान है। कुर्सी पर बैठी हुई रतना कुछ लिख रही है। उसकी वेश-भूषा आधुनिक ढंग की है। कलाई में घड़ी बांधे है। रेडियो पर गाना हो रहा है।)[2]

साथ ही इस एकांकी संग्रह की एकांकी 'रंग मे भंग' जिसे स्वयं लेखक ने एवरग्रीन एकांकी माना है, इस के शुरुआत में भी दृश्य संकेत दिए गए हैं -

(होस्टल का कमरा। सोफासेट, टेबल, पुस्तकें आदि। टेबल की दराज में एक लड़की का फोटो रखा है। परदा खुलता है उस समय नौकर मंगल फर्नीचर साफ करता हुआ और कई फिल्मी गीत गुनगुनाता हुआ नजर आता है। खन्ना का प्रवेश। सूट में है।)[3]

'चूहें' एकांकी में एकांकी के पूर्व संक्षेप में दृश्य संकेत दिया गया है -

(सुबह आठ बजे अनोखेलाल अपने मकान की गैलरी में बैठे हैं। सामनेवाले मकान की गैलरी में पोपटलाल आते हैं।)[4]

इन चार एकांकियों के अलावा अन्य कहीं दृश्यों के बारे में विशेष ध्यान नहीं दिया गया है। अत: इन एकांकियों के मंचन के लिए एक सुयोग्य निर्देशक की आवश्यकता है। एक योग्य निर्देशक इन एकांकियों को सफलता से रंगमंच पर सादर कर सकता है।

3.2.3 अभिनय निर्देश :

पुणतांबेकर द्वारा लिखे गए इस एकांकी संग्रह में अभिनय के भी कोई निर्देश नहीं मिलते हैं। कूल चौदह एकांकियों में से केवल 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ', रंग में

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ', पृष्ठ-15
2. वही - 'तितली', पृष्ठ - 31
3. वही - 'रंग में भंग', पृष्ठ - 72
4. वही - 'चूहें', पृष्ठ - 171

भंग', तितली आदि एकांकियों मे सुयोग्य अभिनय निर्देश दिए गए हैं। लेकिन अन्य एकांकी में यह अभिनय निर्देश इतने औचित्यपूर्ण नहीं जान पड़ते। इन अन्य एकांकियों में दिए गए निर्देश अभिनय की अपेक्षा रेडियो नाटक की दृष्टि से लिखे गए हैं।

इन एकांकियों का मुख्य उद्देश्य विसंगतियों पर हँसते-हँसते दृष्टि डालना मात्र है। अत: अभिनय आदि बातों को गौण स्थान दिया गया है। 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' में अभिनय निर्देश इस प्रकार से दिए गए हैं -

"शांती : (हँसती हुई) और वह है शादी का ज्वर। नहीं ?

किशोर : हाँ।

कैलाश : अब किसी दूसरे विषय पर बात करने के लिए क्या लोगे ?

किशोर : (आँखे मिचकाकर उषा की ओर देखते हुए) - ज्वर की दवा तो अच्छी रही कैलाश ?

(इसी समय पिताजी आते हैं और अपनी जगह आकर बैठ जाते हैं।)"[1]

इसी प्रकार से पूरी एकांकी में समय-समय पर अभिनय के विषय में संकेत दिये गए हैं। साथ ही तितली एकांकी जो आधुनिक स्त्री के बदलते मानसिकता पर प्रकाश डालता है, उसमें भी अभिनय निर्देशों को कंस में दिया गया हैं।

"रतना : (लिखते लिखते एकदम) - राधा ... राधा। (कोई उत्तर न पाकर व्यग्र हो जाती है।) भगवान जाने कहाँ चली गई। अरी ओ राधा।

राधा : (अन्दर से ही) आई, बीबीजी। (कमरे में प्रवेश करती है।) क्या काम है ?

रतना : यह रेडिओ बन्द कर दे। नाक में दम कर रहा है। लिखने में बाधा हो रही है। (राधा रेडिओ बन्द करती है।)"[2]

'रंग में भंग' एकांकी में अभिनय संकेत मंचन की दृष्टि से सुयोग्य सिद्ध हुए है। डॉ. ओमप्रकाश शर्मा इस एकांकी के विषय में लिखते हैं - "'रंग में भंग' इस संग्रह का सर्वोत्कृष्ठ एकांकी तथा मंचन के लिए सर्वथा उपयुक्त। व्यंग्य संवाद तथा स्थिति दोनों में से ही उभरता है।"[3] इस प्रकार इस एकांकी के अभिनय निर्देश दृष्टव्य है, जो हर संवादों मे कंस में दिए गए हैं।

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ', पृष्ठ-13
2. वही - 'तितली', पृष्ठ - 31
3. सं. डॉ. बालेंदु शेखर तिवारी एवं अन्य - व्यंग्य चिंतना और शंकर पुणतांबेकर, पृष्ठ - 60

"खन्ना : मेरा कमरा कोई शस्त्रागार है, जो यहाँ कोई हथियार मिल जाए।

वर्मा : (खन्ना का हाथ झटके से अपने हाथ में पकड़कर) तो ले लो जो भी चीज मिल जाए।

खन्ना : ठीक है। (कोने में रखी एक कुर्सी उठाता है।)

(वर्मा टी-टेबल उठाता है। दोनों एक दूसरे पर गुर्राते हैं, उसी समय धोती कुरता पहने वार्डन का प्रवेश)

मेहता : (वार्डन को देखकर डरकर) अरे बापरे वार्डन। (बाहर चला जाता है।)

(इधर वार्डन को देखते ही खन्ना और वर्मा उठाई हुई चीजें नीचे रख देते हैं और एकदम एक साथ बोल उठते हैं - सर आप?)"[1]

इस प्रकार से उपर्युक्त तीन एकांकियों में दिए गए अभिनय संकेत मंचन की दृष्टि से उपयुक्त जान पड़ते हैं। अभिनय निर्देश अन्य एकांकियों में कम ही दिए गए हैं। अनोखेलाल नामक पात्र युक्त कुछ ही एकांकियों में अभिनय संकेत दिए गए हैं, लेकिन वे अभिनय की दृष्टि से उतने सहायक नहीं बन पाए हैं।

3.2.4 **पात्र सृष्टि :**

पात्र सृष्टि के विषय में विचार करें तो इस एकांकी संग्रह में पात्रों के व्यक्तित्व के विषय में कोई खास संकेत, निर्देश नहीं मिलते हैं। अत: पात्रों के संवादों के माध्यम से पात्रों के व्यक्तित्व के बारे में अनुमान मात्र लगाया जा सकता है। इस एकांकी संग्रह में ज्यादातर एकांकियों में अनोखेलाल नामक पात्र आ गया है । कुल चौदह एकांकियों में से नौ एकांकी अनोखेलाल पात्र को लेकर लिखे गए हैं। यह अनोखेलाल एक सामान्य नागरिक का प्रतिनिधित्व करता है। इसका चरित्र असाधारण लापरवाही तथा मूर्खताओं का उदाहरण है। अनोखेलाल का बीमार पड़ना, खाना बनाना, चांदनी रात की सैर, विवाह दिन आदि में मनोरंजक चित्रण हुआ है। उसी प्रकार अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज, उनका सेवाव्रत, चूहें आदि में भी सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्य किया गया है।

अनोखेलाल पात्र एक समाजसेवी के रूप में सामाजिक विसंगती को स्पष्ट करता है, तो चूहें एकांकी के माध्यम से वर्तमानकालीन नेताओं ने राजनीतिक क्षेत्र में मचाई हुई

---

1. डॉ. शंकर पुणतांबेकर - 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' - 'रंग में भंग', पृष्ठ-89-90

हडकंप को उजागर किया है। ऑफिस का चार्ज मिलने पर अनोखेलाल के स्वभाव में आया बदलाव मानवीय प्रवृत्ति तथा मध्यवर्गीय मनुष्य की बढ़ती अपेक्षाओं का प्रतीक है। अन्य एकांकियों में किशोर के संवाद डाक्टरों की मनोवृत्ति पर प्रकाश डालते हैं। शोभा एक ऐसा पात्र है जो आधुनिकता के युग में भी अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को भूली नहीं है। रतना अतिआधुनिकता के जाल में फँसी हुई औरतों का प्रतीक है। इस प्रकार से कुछ एकांकियों के पात्रों की सृष्टि की गई है।

3.2.5 **विषय केंद्रिता :**

विवेच्य एकांकी संग्रह में शिल्प की एक विशेषता दिखाई देती है और वह है - 'विषयकेंद्रिता'। अन्य रचनाओं में कथा का या विषयवस्तु को विकास, चरम सीमा, अंत इस क्रम से प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन इस संग्रह में सभी एकांकी एक विशिष्ट समस्या, विषय, घटना को लेकर उसी के इर्द-गिर्द घूमते हैं और उसकी विसंगतियों की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करते हैं। यह सभी एक हास्य-व्यंग्य एकांकी हैं। व्यंग्य का काम सुधार लाने का नहीं तो विसंगतियों, समस्याओं को निर्दिष्ट करना तथा उन पर व्यंग्य करना मात्र है, तो हास्य का काम मनोरंजन करना है। इस दृष्टि से देखे तो इन सभी एकांकियों में से कुछ व्यंग्य का कार्य करती है तो कुछ हास्योत्पत्ति का। व्यंग्य एकांकी राजनीतिक, सामाजिक, विषयों पर प्रकाश डालते हैं। हास्य एकांकी हलके-फुलके विषयों को लेकर लिखे गए हैं।

3.2.6 **प्रतीक योजना :**

इस संग्रह में संकलित 'तितली' और 'चूहें' यह दो प्रतीकात्मक एकांकी है। 'तितली' केवल एकांकी का नाम नहीं है तो वह आधुनिक स्त्री के स्वच्छंद आचार-विचारों का प्रतीक है। तितली की स्वच्छंदचारिणी स्वभाव के साथ आधुनिक स्त्री की स्वच्छंदी स्वभाव को सामने रखकर पुणतांबेकर ने प्रस्तुत एकांकी के लिए 'तितली' शीर्षक दिया है।

'चूहें' एकांकी में भी केवल शीर्षक में ही नहीं तो पूरी एकांकी में चूहों की स्वाभाविक वृत्ति की तुलना नेताओं की भ्रष्टाचारी वृत्ति से की गई है। नेताओं की वृत्ति के लिए चूहों को प्रतीक रूप में लिया गया है। जिस प्रकार से चूहें अपनी वृत्ति से विवश घर की

सब चीजें खुरेद-खुरेद कर खराब कर देते हैं उसी प्रकार नेता भी समाज में भ्रष्टाचार कर समाज को खोखला बना रहे हैं। इस एकांकी में प्रस्तुत विषय पर व्यंग्य अनूठा बन पड़ा है।

3.2.7 शीर्षक योजना :

एकांकियों के शीर्षक के विषय में भी कहा जाए तो कुछ एकांकियों के शीर्षक संक्षिप्त तथा प्रतीकात्मक है, तो अनोखेलाल नामक पात्र को लेकर लिखे गए एकांकियों के शीर्षक दीर्घ है। प्रस्तुत एकांकियाँ समाज की विभिन्न विसंगतियों पर व्यंग्य करते हैं।

3.2.8 संकलन-त्रय एवं मंचीयता -

'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' इस एकांकी में संकलन-त्रय का अभाव है। 'इंटरव्यू की तैयारी' अथवा 'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज' जैसे एकांकियों में संकलन-त्रय का निर्वाह हुआ है, तथापि मंच पर ये अपेक्षित प्रभाव छोड़ते हो इसमें संदेह है। 'रंग में भंग' इस संग्रह का सर्वोत्कृष्ट एकांकी है। यह मंचन के लिए सर्वथा उपयुक्त है। संवाद तथा प्रसंग दोनों से व्यंग्य उभरता है। इस एकांकी को पुणतांबेकर ने 'एवरग्रीन' एकांकी माना है। संग्रह के शेष एकांकी हास्य एकांकी है। यह मंचन की दृष्टि से उतने उपयुक्त नहीं जान पड़ते लेकिन यह रेडिओ नाटक के लिए योग्य है।

इस प्रकार से प्रस्तुत एकांकी संग्रह में शिल्प की ओर इतना ध्यान नहीं दिया गया है। फिर भी इसमें भाषा शिल्प, संवाद शिल्प, रंगमंचीय निर्देश, अभिनय निर्देश, पात्र सृष्टि, विषयकेंद्रिता, प्रतीक योजना आदि का कम-अधिक मात्रा में निर्वाह हुआ है। पुणतांबेकर की यह प्रारंभिक व्यंग्य रचना होने के कारण इसमें कुछ अभाव रह गए हैं। इस बात को स्वयं लेखक ने स्वीकार किया है कि इसके संवादों में गतिमानता नहीं है। लेकिन इसके प्रसंग आज भी हास्य का निर्माण करने में सक्षम है। इसमें शिल्प का निर्वाह हुआ है लेकिन वह प्रभावी नहीं बन पड़ा है। व्यंग्य पर हास्य का प्रभाव दिखाई देता है। फिर भी यह एकांकी कॉलेज के स्नेहसंमेलन आदि में खेलने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं और आगे भी उपयोगी सिद्ध होंगे। यह हास्य से युक्त एकांकी होने पर भी इसका व्यंग्य दर्शकों पर अवश्य प्रभाव छोड़ता है।

3.3 निष्कर्ष -

समाज की विसंगतियों को दिखाना ही व्यंग्य साहित्य का मुख्य उद्देश्य है। व्यंग्यकार पुणतांबेकर ने विवेच्य एकांकी संग्रह की एकांकियों में समाज में स्थित व्यंग्य को दिखाया है। डॉक्टरों की पूँजीवादी वृत्ति का उद्घाटन, युवतियों में अतिआधुनिकता का आकर्षण, चुनाव व्यवस्था का खोखलापन, छात्रावास में रहनेवाले छात्रों की स्वच्छंद मनोवृत्ति, नहाने की आवश्यकता पर प्रश्नचिह्न, नेताओं का ढोंग आदि विषयों के साथ-साथ कुछ हलके-फुलके घरेलु विषयों को लेखक ने हास्य-व्यंग्य शैली में उजागर किया है।

शिल्प की दृष्टि से यह संग्रह पूरी तरह से सफल तो नहीं बन पड़ा है, लेकिन इसे असफल भी नहीं कहा जा सकता। सभी एकांकी थोड़े-बहुत व्यंग्य से युक्त है। यह व्यंग्य सामाजिक, राजकीय क्षेत्र, शैक्षिक व्यवस्था और अन्य छोटे-मोटे विषयों को लेकर किया गया है। इसमें कहीं-कहीं वक्रोक्ति का तो कहीं बहुत ही कम मात्रा में उपमा अलंकार का प्रयोग दिखाई देता है। व्यंग्यप्रधान एकांकियों की शुरुआत में रंगमंचीय निर्देश दिए गए हैं। अभिनय संबंधी भी निर्देश दिखाई देते हैं। इसमें 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' में व्यंग्य उत्कृष्ट बन पड़ा है परंतु इस एकांकी में संकलन-त्रय का ध्यान नहीं रखा गया है। एक सुयोग्य निर्देशक के निर्देशन में इन एकांकियों का सफलता से मंचन किया जा सकता है। इस दृष्टि से 'इन्टरव्यू की तैयारी', 'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज', 'चूहें', 'रंग में भंग' जैसी एकांकियों में भी अच्छा खासा व्यंग्य बन पड़ा है। इसमें व्यंग्य उत्कृष्ट रूप में विद्यमान है और यह एकांकी मंच पर भी अपेक्षित प्रभाव छोड़ती है। कॉलेज के स्तर पर मंचीत करने के लिए यह एकांकी बिल्कुल फिट है। संक्षेप में विषय की विसंगती को पाठकों के सामने ना केवल रखा गया है, तो उन्हें सोचने पर विवश किया है। पाठकों का ध्यान अनायास ही इस विसंगती की ओर आकृष्ट हो जाता है।

समस्त एकांकियों का एक मात्र उद्देश्य विसंगती को सामने लाना है। उद्देश्य की दृष्टि से विवेच्य एकांकी सफल रहे हैं। कथ्य का निर्वाह इन एकांकियों में पूर्ण रूप से हुआ

है। कथ्य और शिल्प के प्रयोग से उत्कृष्ट साहित्य निर्माण होता है। प्रस्तुत एकांकी संग्रह में भी कथ्य के साथ शिल्प का जिस प्रकार प्रयोग किया गया है, वह एकांकियों के उद्देश्य का सफलता से वहन करता है । उनमें शिल्प के विविध प्रयोग आवश्यक नहीं लगते। इन एकांकियों के निर्माण का उद्देश्य विसंगतियों पर व्यंग्य कर समाज को उस पर विचार करने के लिए प्रवृत्त करना मात्र है और इस उद्देश्य को प्रस्तुत करने में विवेच्य एकांकी सफल रहे हैं।

❑❑❑❑